वर्ष: 14 | अंक : 4 | अप्रैल 2023 | मूल्य: ₹ 10 /=

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, धर्म व सामाजिक एकता की प्रतीक हिंदी मासिक पत्रिका

हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, धर्म व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-14, अंक-4
अप्रैल, 2023
चैत्र–वैशाख, 2080 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-।, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह
मूल्य-एक प्रति-रु.10/-
पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:
कार्यालय: हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074
संपर्क सूत्र-011-26652101/102
मो. नं. : 8800291788, 8800291288
Email: hansloksandesh@gmail.com
Website: www.hanslok.org
Subject to Delhi Jurisdiction
RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

आनंदमय जीवन ही परमलक्ष्य

आत्मज्ञानी संतों का कहना है कि हमारा तर्कशील मन छोटा-सा है। दिमाग का केवल बारह प्रतिशत हिस्सा चेतन है और बाकी अट्ठासी प्रतिशत अवचेतन। पर आत्मज्ञान के अभ्यास से इस चेतन मन को सांसों में समायी हरिनाम धुन में लीन करके इतना सबल बनाया जा सकता है कि वह अवचेतन हिस्से पर भी आवश्यक नियंत्रण कर सकता है। जब मन अभ्यास से सांसों के साथ एकाकार हो जाता है, तब मायावी सभी नशे छूट जाते हैं और तब एक ही नशा होता है, आनंद का। जब साधक हृदय का अनहद नाद सुनता है, तब परमानंद में मस्त हो जाता है। ऐसा अनुभव होने पर वह बाहर से मानवता के साथ होता है और भीतर उसका ठहराव परमानंद के साथ हो जाता है। यही जीवन का उत्सव है और यही मनुष्य जीवन की सफलता। नाम सुमिरण के नियमित अभ्यास से हर किस्म के नशे से मुक्ति पाना पूरी तरह संभव है। सारे दु:ख और तनाव हमारी नासमझी और गलत सोच के कारण हैं। इसलिए सिर्फ अपनी सोच बदल दीजिए, सभी दु:ख और तनाव खत्म हो जाएंगे। ऐसा नहीं है कि जितने भी पहुँचे हुए संत थे, उनके जीवन में सब कुछ अच्छा-अच्छा होता था, पर यह बात सच है कि वे चैबीसों घंटे उस परम के साथ जुड़कर आनंद में रहत थे। गुरु नानक देव एक तारे की तान पर गीत गाते चलते थे और आनंदित रहते थे। कबीर कपड़ा बुन कर बेचते, तब उनके खाने का जुगाड़ होता था। लेकिन वे यही कहते थे कि भीतर से आनंद झरता रहता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सुख और दु:ख सिर्फ आदतें हैं। हम अगर दु:खी रहने की आदत डाल सकते हैं तो सुखी रहने की आदत भी डाल सकते हैं। इसलिए प्रतिदिन सुबह उठते ही आने-जाने वाली सांसों में रम रहे राम नाम को हृदय से सुमिरण करके खुद को आनंद से भर लीजिए। प्रभु ध्यान-सुमिरण के अभ्यास को ही स्वभाव बना लीजिए। यह गलत सोच है कि इतना धन, पद, प्रतिष्ठा मिल जाए तो आनंदित हो जाएंगे।

पहले सद्गुरु प्रदत्त ज्ञान के अभ्यास से अपनी सांसों के भीतर की शक्ति को पहचान कर हृदय में विराजमान परमात्मा के राज्य में प्रवेश करें, बाकी सभी चीजें अपने आप मिलती चली जाएंगी। भीतर से निरंतर आनंद का झरना झरने लगेगा। यही मनुष्य जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है। बैशाखी का महापर्व हमें अपने भीतर झांकने की प्रेरणा देता है ताकि हम अपने आत्मस्वरूप को जानकर सभी प्रकार के दु:ख और कष्टों से मुक्ति पा सकें। ■

माताश्री राजेश्वरी देवी : वात्सल्य, ज्ञान और दया की प्रतिमूर्ति

मातृ शक्ति दिवस, 6 अप्रैल पर विशेष

माताश्री राजेश्वरी देवी अपने समय की ऐसी महान विभूति थीं जिन्होंने देश-विदेश में फैले लाखों लोगों को अध्यात्म ज्ञान की दीक्षा देकर उनके जीवन स्तर को बदल दिया। वे ज्ञान, करुणा और वात्सल्य की साक्षात् प्रतिमूर्ति थीं। इसलिए उनके प्रति अपार श्रद्धा एवं प्रेम रखने के कारण देश-विदेश में फैले उनके लाखों भक्त उन्हें **"जगतजननी माता"** के नाम से भी पुकारते हैं। माताश्री राजेश्वरी देवी की दया अपने भक्तों पर सदैव बरसती रहती थी। एक बार जो भी व्यक्ति श्रद्धा एवं विनयपूर्वक ज्ञान को जानने के लिए उनके पास आया, उन्होंने उसे अमूल्य अध्यात्म ज्ञान देकर उसके जीवन को सुख-शांति और आनंद के खजाने से भर दिया।

माताश्री राजेश्वरी देवी का जन्म देवभूमि उत्तराखण्ड स्थित पौड़ी गढ़वाल जिले के अंतर्गत मेलगांव, पट्टी तलाईं में 6 अप्रैल, 1932 को हुआ। उनके पिता श्री गोपाल सिंह तथा माता श्रीमती चंद्रादेवी धार्मिक प्रवृत्ति की थीं एवं सत्संग के प्रति उनका विशेष लगाव था। इसलिए उनके घर पर हमेशा संत-महात्माओं का आना-जाना लगा रहता था। उस समय उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्र में स्कूल एवं पाठशालाएं नहीं होने के कारण श्री राजेश्वरी देवी की शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। वे बाल्यकाल से ही कुशाग्र बुद्धि की धनी थीं। उनकी बचपन से ही रामायण, गीता एवं वेद-पुराण आदि धर्मशास्त्रों को पढ़ने में विशेष रुचि थी। सत्संग तथा हरि-चर्चा का वातावरण मिलने से उनके अन्दर प्रभु-दर्शन तथा भक्ति के संस्कार अंकुरित होने लगे थे।

श्री राजेश्वरी देवी का विवाह पौड़ी जिले के पोखड़ा ब्लाक स्थित 'गाड़ की सेड़िया' नामक गांव में योगीराज श्री हंसजी महाराज के साथ संपन्न हुआ। उस समय श्री हंसजी महाराज अपने आध्यात्मिक गुरु स्वामी स्वरूपानंद जी महाराज के सानिध्य में रहकर लाखों लोगों को सत्संग, ज्ञान और भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे रहे थे। देश-विदेश में अध्यात्म ज्ञान की अलख जगाते हुए सन् 1966 में श्री हंसजी महाराज हम सबको छोड़कर परमधाम को चले गये। उनका महानिर्वाण लाखों भक्तों एवं संत-महात्माओं के लिए अत्यंत कष्टदायक तथा असहनीय था।

इस दु:खद घड़ी से उबरना किसी के लिए भी आसान नहीं था। उनके परमधाम जाने की घटना ने भक्त समाज के साथ ही माताश्री राजेश्वरी देवी को भी बुरी तरह आहत कर दिया था। माताश्री राजेश्वरी देवी महान शक्ति थीं, उन्होंने धीरे-धीरे अपने आपको संभाला। उन्हें एक अद्भुत अनुभूति हुई कि ज्योतिर्मय विराट पुरुष श्री हंस जी महाराज हमेशा उनके साथ हैं। माताश्री राजेश्वरी देवी ने नतमस्तक हो मन ही मन श्री हंस जी महाराज को प्रणाम किया। उसके बाद उन्होंने रोते-बिलखते भक्तों को भी ढाढस बंधाया और ज्ञान एवं भक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

माताश्री राजेश्वरी देवी का पहला विशाल सत्संग समारोह सन् 1970 में लंदन के ओल्ड टाउन हॉल में हुआ, जहाँ पर कई हजार लोगों ने उनके प्रवचन सुने तथा अध्यात्म ज्ञान की दीक्षा ली। जब वे पहली बार लन्दन गईं, तो वहां हवाई अड्डे पर उनका जोरदार स्वागत किया गया। न्यू कैसल के लॉर्ड मेयर ने माताश्री राजेश्वरी देवी का अभिनंदन करते हुए कहा-"यह हमारे देश के लिए सौभाग्य की बात है कि भारत से आकर माँ राजेश्वरी देवी शांति का संदेश दे रही हैं। उनका संदेश तथा शिक्षाएँ आदर के साथ ग्रहण करने योग्य हैं।"

माताश्री राजेश्वरी देवी का मातृशक्ति के प्रति बहुत

प्रेम था। वे महिलाओं के दु:ख-दर्द को देखकर द्रवित हो जाती थीं तथा उनके कष्टों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास करती थीं।अपने प्रवचनों में वे कहा करती थीं-"नारी मातृशक्ति है, शक्तिस्वरूपा है। जहां पर नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।" उन्होंने महिलाओं को प्रेरित किया कि वे अपने बच्चों में प्रभु भक्ति, देश प्रेम तथा मानव सेवा के संस्कार डालें, जिससे वे आगे चलकर देश के अच्छे नागरिक बन सकें। माताश्री राजेश्वरी देवी का सदाचार तथा सत्कर्म में अटूट विश्वास था और कर्म को वे ईश्वर की आराधना मानती थीं। वे प्रवचन में अक्सर कहा करती थीं कि मैं जादू-टोने में विश्वास नहीं रखती, मैं सत्कर्म में विश्वास करती हूं, क्योंकि मनुष्य होने का गौरव कर्मशीलता में ही है। उनका कहना था कि भगवान के नाम का सुमिरण करने से ही दुनिया में शांति हो सकती है, बाहरी चीजों के द्वारा यह संभव नहीं है। मनुष्य की वृत्तियों को बदलने की क्षमता केवल भगवान के नाम में ही है, जिसका ज्ञान समय के सद्गुरु महाराज देते हैं।

माताश्री राजेश्वरी देवी अपने प्रवचनों में अक्सर कहा करती थीं-"समाज में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो अपनी धनराशि को गलत कामों में लगाते हैं, दूसरे को मारने में लगाते हैं, जुए-शराब में लगाते हैं। वे स्वयं अपना जीवन भी दु:खी करते हैं और समाज में भी गंदगी फैलाते हैं। पर जो लोग अच्छा काम करते हैं, परहित के लिए कार्य करते हैं, उन्हें कभी धन की कमी नहीं होती। इसलिए धन को अच्छे कार्यों में लगाओ। महान आत्माएं किसी की दौलत की भूखी नहीं होतीं। वे तो चाहती हैं कि किसी तरह मनुष्य का कल्याण हो। जो व्यक्ति अच्छा कार्य करता है, वह मरकर भी जीवित रहता है और लोग उसके जीवन से शिक्षा एवं प्रेरणा लेते हैं।"

माताश्री राजेश्वरी देवी ने बच्चों को भौतिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देने तथा उनके बेहतर स्वस्थ जीवन के प्रति लोगों को जागरूक किया। दीन-दु:खियों एवं जरूरतमंदों की सेवा को वे बहुत महत्व देती थीं। माताश्री राजेश्वरी देवी निराश एवं हताश हो चुके गरीब लोगों के लिए आशा की किरण बनकर धरती पर आई थीं। उन्होंने गरीब एवं असहाय लोगों के ठहरने तथा इलाज कराने के लिए कई जगह धर्मशालाओं एवं धर्मार्थ चिकित्सालयों का निर्माण कराया। उन्होंने लोगों के जीवन को प्रेम, ज्ञान और भक्ति के आनंद से सराबोर कर दिया।

'आया है सो जायेगा' के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए 25 नवम्बर 1991 की रात्रि में माताश्री राजेश्वरी देवी हम सबको ज्ञान और भक्ति के मार्ग पर लगाते हुए परमधाम को चली गईं। यद्यपि वे शरीर से आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका आशीर्वाद युगों-युगों तक भक्तों को मिलता रहेगा। उनका प्रेम, दया और शिक्षाएं प्रेरणा बनकर आज भी हमारा मार्गदर्शन कर रही हैं।

माताश्री राजेश्वरी देवी के महानिर्वाण के बाद उनके सुपुत्र श्री भोले जी महाराज अपनी धर्मपत्नी मंगला जी के साथ उनके पदचिन्हों पर चलते हुए अध्यात्म ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा समाज सेवा के कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी की प्रेरणा से हंस कल्चरल सेंटर एवं द हंस फाउण्डेशन द्वारा माताश्री राजेश्वरी के नाम से देश के कई स्थानों पर स्कूलों का संचालन किया जा रहा है, जिनमें गरीब बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है।

उत्तराखण्ड में बच्चों को स्कूल लाने-ले जाने के लिए कई स्कूलों को द हंस फाउण्डेशन तथा हंस कल्चरल सेंटर की ओर से नि:शुल्क बसें प्रदान की गई हैं। पहाड़ के दूर-दराज वाले क्षेत्र के गरीबों तथा जरूरतमंद लोगों के इलाज के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त द हंस फाउण्डेशन जनरल अस्पताल, सतपुली (पौड़ी गढ़वाल) का संचालन किया जा रहा है। बहादराबाद (हरिद्वार) में द हंस फाउण्डेशन आई केयर (आंखों के अस्पताल) का संचालन किया जा रहा है। इन दोनों अस्पतालों से प्रतिमाह हजारों लोग अपने स्वास्थ्य की जांच कराकर नि:शुल्क दवाइयां प्राप्त करते हैं।

आज हम सब माताश्री राजेश्वरी देवी की पावन जयंती (6 अप्रैल) पर उन्हें कोटि-कोटि नमन करते हुए निरंतर ज्ञान, भक्ति तथा साधना के पथ पर आगे बढ़ने की प्रार्थना करते हैं। माताश्री राजेश्वरी देवी की पावन स्मृतियों को बनाये रखने के लिए उनकी पावन जयंती आगामी 6 व 7 अप्रैल, 2023 (गुरुवार-शुक्रवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली में मातृ शक्ति दिवस के रूप में मनाई जायेगी। कार्यक्रम में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के सत्संग-प्रवचनों का लाभ श्रद्धालु-भक्तों को मिलेगा। ■

भगवान के नामरूपी महामंत्र को जानने से ही मुक्ति

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! आप लोग धर्मशास्त्र पढ़ते हैं, संत-महात्माओं से सत्संग सुनते हैं, परन्तु जब तक आप उन पर अमल नहीं करेंगे, तब तक उनसे कोई लाभ नहीं मिलेगा। एक बार गुरु द्रोणाचार्य ने अपने सब शिष्यों को पाठ दिया, उसमें लिखा था कि सच बोलना चाहिए। सबने अपना-अपना पाठ सुनाया; परन्तु युधिष्ठिर ने कहा कि मुझे याद नहीं हुआ, क्योंकि जब तक सच नहीं बोला तो याद क्या किया?

दुनिया स्वार्थवश कितना झूठ बोलती है, वैसे तो दुनिया की जितनी बातें हैं, सब उल्टी हैं। जो चलती है, उसे कहते हैं-गाड़ी। जो दूध का पानी जलकर सार रह जाता है, उसको कहते हैं-खोया, और जो गड़ा हुआ है, उसे कहते हैं-ऊखल तथा जिसमें रंग है, उसे कहते हैं-नारंगी। जिसमें लाभ-ही-लाभ है, दुनिया के लोग उसमें हानि समझते हैं। शास्त्र कहते हैं कि भजन करना चाहिए, परन्तु भजन में कितने लगे हैं? और जिसमें हानि बतायी है, उन विषयों में संसार लगा हुआ है। आखिर सत्संग तो सुना बहुत, किन्तु पल्ला झाड़कर चले गये, तो क्या लाभ हुआ? सत्संग को हृदय में धारण करो, विचारो और सत्य की ओर लगो। आप लोगों ने नाम की महिमा सुनी है। कबीर साहब कहते हैं-

नाम लिया तिन सब लिया,
सकल वेद का भेद।
बिना नाम नरके पड़ा,
पढ़ता चारों वेद।।

चारों वेदों का पाठ भी कर लिया, परन्तु नाम के जाने बिना नरक को जायेगा, किसी वेद की ताकत नहीं कि वह नरक जाने से रोक सके।

श्रुति सिद्धान्त यही उरगारी।
राम भजो सब काम बिसारी।।
वेद पुरान सन्त मत एहू।
सकल सुकृत फल नाम सनेहू।।
जाकी गाँठी नाम है,
ताकी है सब सिद्धि।
हाथ जोड़ दोनों खड़ी,
अष्ट सिद्ध नव निद्धि।।

श्रुति, वेदों का यही सिद्धान्त है कि सब कामनाओं को छोड़कर भगवान् को भजो। वेद, पुराण और सब संतों का भी मत है कि शुभ कर्मों का फल यही है कि भगवान के नाम में प्रेम होवे, बिना नाम के सभी कर्म निष्फल हैं। जिसके पास नाम है, उसके पास क्या नहीं? नाम के प्रभाव से गणेश जी अष्ट-सिद्धि एवं नव-निद्धि के दाता माने जाते हैं तथा देवताओं में सबसे पहले उनकी पूजा होती है।

नाम प्रभाव जानि गनराऊ।
प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ।।
महामंत्र जोई जपत महेसू।
कासी मुकुति हेतु उपदेसू।।

यदि महामंत्र के अतिरिक्त किसी और नाम से मुक्ति हो जाती तो शंकर भगवान् उस महामंत्र का उपदेश क्यों करते? वह महामंत्र क्या है? बहुत से लोग कहते हैं-'राम' किन्तु राम-राम तो तोता भी कहता है।

कोटि नाम संसार में,
ताते मुक्ति न होय।
आदि नाम जो गुप्त जप,
बूझे विरला कोय।।

दुनिया में भगवान के अनेकों बाहरी नाम हैं, जिनसे मुक्ति नहीं हो सकती। आदि नाम जो गुप्त है, जिसे हनुमान जी ने हृदय फाड़कर बताया, वही सच्चा नाम है। उस नाम को जानने के लिए सद्गुरु की जरूरत होती है। सद्गुरु ऐसा हो जो हृदय के अन्दर नाम को जनाये। मीराबाई ने रैदास को गुरु बनाया। जब मीरा को भगवान के सच्चे नाम का ज्ञान हुआ तो मीरा कहती है-

पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो।
रिस्तु अमोलक दई मेरे सतगुरु,
करी कृपा अपनायो।
जन्म जन्म की पूंजी पायी,
जग का सभी गँवायो।
खर्च न होवे चोर न लेवे,

निशि दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु,
खेहि के पार लगायो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
हरषि हरषि गुण गायो।

मीरा ने क्या पाया-भगवान का नाम। वह ऐसा अखण्ड धन है, जितना बांटें, खर्च होने में नहीं आता। पृथ्वी इतनी बड़ी है, इसमें एक रत्ती भी निकालें, तो उतना कम हो जाती है, गंगा से एक बूंद भी निकालें तो वह एक बूंद कम हो गई, परन्तु नाम में कोई कमी नहीं आती। बाकी संसार की सभी चीजों में कमी हो जायेगी, लेकिन भगवान का नाम ऐसा है कि उसमें कोई कमी नहीं आती। इसीलिये इसको अमर नाम, अमृत नाम कहा है, जिसे महादेव जी ने पार्वती को जनाया और वही सत्यनारायण की कथा विष्णु भगवान् ने नारद को सुनायी। उस नाम को जानने से इच्छित कामना पूरी होती है और अन्त में परमगति-मोक्ष की प्राप्ति होती है। आज उस सच्चे नाम को कोई नहीं जानना चाहता, जिस नाम का सुमिरण करने से बड़ा भारी दु:खी मनुष्य भी सुखी हो जाता है।

नाम जपहिं जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।
सुमिरन से सुख होत है,
सुमिरन से दु:ख जाय।।
कहै कबीर सुमिरण किये,
साईं माहिं समाय।।

कितना सार है कबीर साहब और तुलसीदास जी की वाणी में। पढ़ तो सब लेते हैं, परन्तु कोई रामायण की चौपाई या कबीर के आधे दोहे का ही मतलब बताये? गुरु नानक साहब ने सतनाम का प्रचार किया, उनके मानने वाले शिष्य 'सतनाम वाहे गुरु' कहते हैं, परन्तु क्या कभी विचार किया कि वह सतनाम क्या है? भक्ति प्रभु का चिंतन है। भगवान् कृष्ण गीता अध्याय 8 के पाँचवें श्लोक में बताते हैं कि जो अन्त समय में मेरा स्मरण करता है, वह मेरे को मिलता है और सातवें श्लोक में बताया है कि हे अर्जुन- युद्ध भी कर और मेरा स्मरण भी कर। जब युद्ध करते समय भी निरंतर स्मरण करने को कहा है, तो वह कौन-सा नाम है, उसे समझना होगा! हर समय में उस नाम का स्मरण किया जा सकता है। अन्त समय में जब जीभ अकड़ जाती है, तो उस समय मुंह से राम या कृष्ण नहीं कह सकते। जिन्होंने उस पावन नाम को जपा, वे पूजनीय हो गये। आज अनेकों विद्वान् टीका करते हैं, परन्तु उस नाम को बतावें, भगवान का वह नाम क्या है? मैं पूछता हूँ, इस भजन का अर्थ बतावें-

अचरज देखा भारी साधो,
अचरज देखा भारी रे।
गगन बीच अमृत का कुआं,
झरे सदा सुखकारी रे।।
पंगु पुरुष चढ़े बिन सीढ़ी,
पीवे भर भर झारी रे।
बिना बजाए निशि दिन बाजे,
घंटा शंख नगारी रे।।
बहरा सुन-सुन मस्त होत है,
तन की खबर बिसारी रे।
बिन भूमि के महल बना है,
तामें जोत उजारी रे।
अन्धा देख देख सुख पावे,
बात बतावे सारी रे।।
जीता मर करके फिर जीवे,
बिन भोजन बलधारी रे।
ब्रह्मनंद सन्त जन बिरला,
समझे बात हमारी रे।।

जिसने ऐसा अचरज देखा है, वही सन्त है। भेष तो सब बना सकते हैं, परन्तु भेद बिना गुरु के नहीं मिलता। कबीर साहब कहते हैं कि चिंता तो सतनाम की करनी चाहिए बाकी सब काल की फाँस है। संत कहते हैं-

हम तो सत्य नाम व्यापारी।
कोई-कोई लादे कांसा पीतल,
कोई कोई लौंग सुपारी।।
हम तो लादो नाम धनी को,
पूरण खेप हमारी।।

हमारे पास भगवान के नाम की पूंजी है, नाम का धन है। अन्य पूंजियों में तो नुकसान भी हो सकता है और नफा भी। सांसारिक धन दोगुना हो सकता है, परन्तु भगवान के नाम में नफा भी चौगुना है। यह नाम तथा प्रकाश का सच्चा सौदा है, जिसको वेदों में भर्गो, शास्त्रों में ज्योति, परम प्रकाश, कुरान में नूर–ए–इलाही और बाईबिल में डिवाइन लाइट कहा है। जीव जहाँ से वापस नहीं लौटता, जहाँ न सूर्य, न अग्नि और न चन्द्रमा की ही रोशनी है, उसको यदि इस जीवन में नहीं जाना, तो कब जानोगे?

आज लोग गुरु बनाते हैं, तन्त्र-मन्त्र लिया या कान फड़ाये और कहते हैं कि उपदेश ले लिया, परन्तु उपदेश क्या है? एक देश तो यह है, जहाँ आवागमन है और दूसरा वह देश है, जहाँ से जीव वापस नहीं लौटता। जब उस देश को

> श्रुति, वेदों का यही सिद्धान्त है कि सब कामनाओं को छोड़कर भगवान् को भजो। वेद पुराण और सब संतों का भी मत है कि शुभ कर्मों का फल यही है कि भगवान के नाम में प्रेम होवे, बिना नाम के सभी कर्म निष्फल हैं। जिसके पास नाम है, उसके पास क्या नहीं?

जाना ही नहीं, तो उपदेश कहाँ लिया? इसलिये उस देश को, उस परमधाम को जानना चाहिए, जहाँ से जीव वापस नहीं लौटता। मेरा कहने का मतलब यही है कि ज्योति स्वरूप परमपिता परमात्मा के नाम को जानो तथा भजन-सुमिरण के द्वारा जीवन का कल्याण करो।

भगवान् तो प्रेम तथा विश्वास से मिलते हैं। भिलनी के गुरु मतंग ऋषि जब देह त्यागने लगे, तो उस समय भिलनी रोकर कहने लगी-महाराज! मैं भी जिन्दा नहीं रहना चाहती, इसलिए मैं भी शरीर छोड़ूँगी। मतंग ऋषि कहने लगे-बेटी! तुम शरीर रखो, तुम्हें इस शरीर में भगवान् के दर्शन होंगे। भिलनी ने गुरु के वचनों में विश्वास किया और भगवान् राम के आने की प्रतीक्षा करने लगी। आखिर एक दिन भगवान् उसकी कुटिया पर आ ही गये। भिलनी शरीर की सुध भूल गयी और भगवान् के लिए आसन देना तो दूर, बैठने के लिए कहना भी भूल गयी। तब लक्ष्मण जी ने भिलनी को सचेत करते हुए कहा- भिलनी! भगवान् के बैठने के लिए आसन तो दे दो। तब भिलनी ने भगवान् को बैठने के लिए कहा और जंगल से लाये हुए बेरों को भगवान् के आगे रखा। भगवान् ने उन भक्ति के बेरों को बड़े प्रेम से खाया, उनका भोग लगाया। भगवान् को प्रसन्न जानकर तथा भिलनी भगवान् की परम कृपा को देखकर कहती है-

केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी।
अधम जाति मैं जड़मति भारी।।
अधम ते अधम अधम अति नारी।
तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी।।

हे स्वामी! मैं आपकी किस भाँति स्तुति करूं, क्योंकि मैं नीच जाति की जड़-बुद्धिवाली नारी हूँ। कई स्त्रियाँ अच्छे कुल की और सुन्दर होती हैं, परन्तु मेरी जाति भी नीच है। कई स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी होती हैं जिनको संसार में बहुत मान मिलता है, परन्तु मेरी तो जड़-बुद्धि है। कई नारियाँ पढ़ी-लिखी न होने पर भी बात करने में चतुर होतीं हैं, परन्तु मेरे में तो एक भी गुण नहीं है। भगवान् राम भिलनी को समझाते हुए कहते हैं-

कह रघुपति सुनु भामिनी बाता।
मानउँ एक भगति कर नाता।।
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई।
धन बल परिजन गुन चतुराई।।

हे भिलनी! इन संसार के रिश्तों से मेरा कोई नाता नहीं है। मेरा नाता तो केवल भक्ति से है। जिसके पास भक्ति नहीं है, वह मुझे प्यारा नहीं है। चाहे वह कितनी ऊँची जाति या कुल वाला हो अथवा कितना ही बलवान्, धनवान्, गुणवान, चतुर या बड़े कुटम्ब वाला ही क्यों न हो, पर बिना भक्ति के मनुष्य ऐसा है, जैसे बिना जल का बादल, जिससे हानि ही है, कुछ लाभ नहीं।

भगति हीन नर सोहइ ऐसे।
बिनु जल बारिद देखिअ जैसे।।

हे भिलनी! इन संसार के रिश्तों से मेरा कोई नाता नहीं है। मेरा नाता तो केवल भक्ति से है। जिसके पास भक्ति नहीं है, वह मुझे प्यारा नहीं है। चाहे वह कितनी ऊँची जाति या कुल वाला हो अथवा कितना ही बलवान्, धनवान्, गुणवान, चतुर या बड़े कुटम्ब वाला ही क्यों न हो, पर बिना भक्ति के मनुष्य ऐसा है, जैसे बिना जल का बादल, जिससे हानि ही है, कुछ लाभ नहीं। अन्त में भगवान् ने नवधा भक्ति को बताते हुए कहा है कि-

नवम सरल सब सन छल हीना।
मम भरोस हिय हरष न दीना।

जिसे विश्वास ही नहीं, वह भक्ति क्या करेगा। देवी पुराण में देवी की महिमा गाते हुए लिखा है-

या देवी सर्वभूतेषु, चैतन्य रूपेण,
प्रकाश रूपेण। सच्चिदानन्द रूपेण,
कल्याण रूपेण, विश्वास रूपेण।।

हे आदिशक्ति! देवी! तुम सब भूतों में चैतन्य रूप से, प्रकाश रूप से और सत्-चित्-आनन्दस्वरूप से निवास करती हो। तुम कल्याण रूप हो और विश्वास से प्राप्त होने वाली हो।

केवल विश्वास होना चाहिए, फिर परमात्मा दूर नहीं है। जो भगवान को दूर समझते हैं, भगवान् उन्हीं से दूर हैं, परन्तु जिन्हें यह विश्वास है कि भगवान् हमारे साथ हैं, उनसे भगवान् कभी ओझल नहीं होता। विश्वास भी ऐसा हो, जो टले नहीं। जो आज या कल, साल, दो साल, दस, पचास या सौ साल में अथवा इस जन्म में या अनेक जन्मों के बाद विश्वास टल गया, तो उसे अटल विश्वास नहीं कह सकते। गुरु गोविन्दसिंह जी के लाखों शिष्यों में अटल विश्वास करने वाले तो केवल पाँच प्यारे ही निकले थे, शेष तो विश्वास छोड़कर भाग ही गये। उनमें से भी चालीस की स्त्रियाँ विश्वास करती थीं, इसलिए वे चालीस शिष्य भी वापस आ गये। गुरु महाराज ने उन्हें भी मुक्ति प्रदान की, परन्तु प्यारे पाँच ही कहलाये। पहला प्यारा जो सिर देने के लिए गया, उसका कितना अटल विश्वास था। उसने अपनी ओर से तो सिर सचमुच दे ही दिया था, भले ही गुरु महाराज ने उसका सिर नहीं काटा। गुरु महाराज जी ने उसकी परीक्षा ली थी, जिसमें वह पास हो गया।

मनुष्य शरीर में ही भगवान का भजन संभव

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! यह जो शरीर रूपी मन्दिर है, इसी के अन्दर हमारे प्रभु वास करता है। भगवान का वह सच्चा नाम, वह शब्द कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे ही प्राणों के अन्दर है। इसलिए उस प्रभु को अपने ही अंदर ढूंढ़ो। संत कबीरदास जी कहते हैं-

घूघंट के पट खोल री,
तोहे पिया मिलेंगे।

जब हमारे अज्ञानरूपी घूंघट के पट खुलेंगे, तभी हमें भगवान के दर्शन हो सकेंगे। वह अज्ञान का घूंघट कौन-सा है, हमें समझना पड़ेगा। उसका भेद समय के सच्चे तत्वदर्शी महापुरुष बताते हैं? संत ब्रह्मानन्द जी कहते हैं-

घट में ही उजियारा साधो,
घट में ही उजियारा रे।

हमारे घट के अन्दर ही प्रभु का प्रकाश है, लेकिन अज्ञानतावश हम उसे बाहर ढूंढ रहे हैं। रामकृष्ण परमहंस कहते हैं कि जब एक बच्चा मंदिर में जाता है तो मुझे खुशी होती है, पर जब एक वृद्ध मंदिर जाता है, तब मुझे दु:ख होता है, क्योंकि उसने अभी तक अपने अन्दर भगवान के नाम को नहीं जाना, भगवान के उस प्रकाश को नहीं देखा और बाहर के प्रकाश को ही जलाने में लगा रहा। बालक तो अबोध है, उसे ज्ञान नहीं, वह अपने पिता से ज्ञान के बारे में पूछता है, लेकिन जो बूढ़ा हो गया और उसने अभी तक प्रभु के सच्चे नाम को नहीं जाना, तो यह दु:ख की बात है। इसलिए समय रहते प्रभु के उस सच्चे नाम को जानो, जिसके लिए यह मनुष्य शरीर मिला है। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

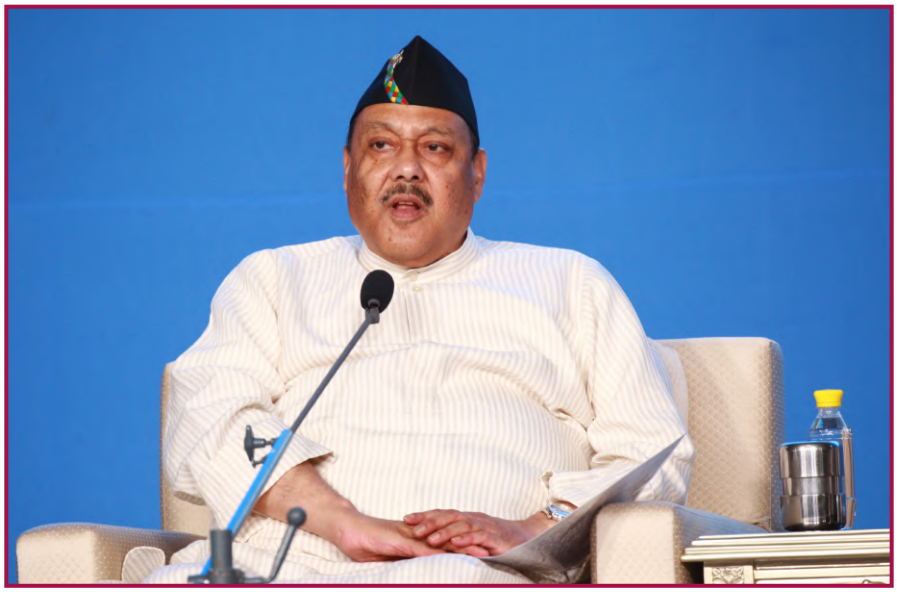

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सद्ग्रंथन गावा।।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।
पाई न जेहि परलोक संवारा।।

बड़े भाग्य से यह देव दुर्लभ मनुष्य शरीर मिला है। यह शरीर मोक्ष के दरवाजे तक पहुंचने का एक साधन है। जिसने ऐसे सुन्दर शरीर को पाकर भी भगवान के सच्चे नाम को नहीं जाना, अपना परलोक नहीं संवारा तथा सारा जीवन ऐसे ही विषय-भोगों में गंवा दिया, तो उसे बाद में पछताना पड़ेगा। संत ब्रह्मानंद जी कहते हैं कि-

खाना पीना सो जाना,
सब काम है पशु समाना।
क्यों देह मनुष की धारी।
हरि भजन करो सुखकारी।।

खाना, पीना, सो जाना आदि नित्य-कर्म तो पशु-पक्षी भी करते हैं, परन्तु यह मनुष्य शरीर हमें किसलिए मिला है, इस पर विचार करना चाहिए। पशु-पक्षी भोजन खा तो सकते हैं, लेकिन पका नहीं सकते, जबकि मनुष्य भोजन पका भी सकता है और खा भी सकता है। मनुष्य संसार के भोगों को भी भोग सकता है तथा प्रभु के नाम को जानकर उसका भजन-सुमिरण भी कर सकता हैं। इसीलिये यह मनुष्य शरीर जो बड़े भाग्य से मिला है, उसे विषय-भोगों में नहीं गंवाना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण से अर्जुन हाथ जोड़कर कहता है-प्रभु! यह चंचल मन वायु की गठरी बांधने के समान कठिन है। मैं इस चंचल मन को वश में नहीं कर सकता। तब भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-हे अर्जुन! यह चंचल मन अभ्यास और वैराग्य से ही वश में होता है, इसलिए तू उस ज्ञान को जानकर उसका अभ्यास कर और मन को वैरागी बना। तू मुझे इन बाहरी नेत्रों से नहीं देख सकता। इसके लिए मैं तुझे दिव्य नेत्र देता हूं। तभी तू मेरी वास्तविकता को जान सकता है। जब भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हैं, तब वह कहता है-प्रभु! आप मेरे मित्र अथवा सखा ही नहीं, बल्कि आप तो गुरुओं के भी गुरु हो।

भगवान का अवतरण भक्तों के कल्याण के लिए

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों! जो भक्त होता है, ज्ञानी होता है, वह हमेशा-दसों इन्द्रियों से तो अपने सांसारिक कार्यों को करता है और ग्यारहवें मन से भगवान का चिन्तन करता है। सन्तों को तो किसी से कोई भेदभाव नहीं रहता है।

जाति पांति पूछे नहीं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।

महापुरुषों की दृष्टि में तो गरीब-अमीर सब समान हैं। उनके अन्दर कोई भेदभाव नहीं रहता है। गौतम ऋषि की स्त्री को देखो, उसके पति ने भी उसको श्राप देकर नरक में धकेल दिया था, पर भगवान् उसके पापों को क्षमा करने के लिए, उसको पावन बनाने के लिए स्वयं उस शिला पर अपने चरण रखते हैं और उसका उद्धार कर देते हैं।

जिस समय रावण का भाई विभीषण भगवान् राम के पास जाता है, उस समय भगवान के लिए वहां पहरा लगा हुआ था। सुग्रीव कहता है कि भगवान्! नीति कहती है कि यह दुश्मन का भाई है, इसको एकदम खत्म कर देना चाहिए। तब भगवान् कहते हैं कि मित्र! तेरी नीति तो ठीक है, पर मेरी नीति कहती है कि जिसने कितने ही ब्राह्मणों का वध किया हो, मगर यदि वह मेरी शरणागत आ जाता है, तो मैं उसको भी माफ कर देता हूँ। तो यह है भगवान् की दृष्टि और संसार की नीति, देख लो। किस प्रकार दुष्ट के भाई को भगवान् ने अपने गले लगाया। तो अगर इन बातों को आज मनुष्य समझ जाए तो संसार से सारे दु:ख नष्ट हो जाएं, गरीबी-अमीरी आदि सभी बुराइयां दूर हो जाएं।

कई बार हमारे पास राजनैतिक नेता आते हैं और कहते हैं कि माँ जी! आप तो भाषण करने में बहुत अच्छी हैं, आप राजनीति को अपनाइये। मैंने कहा-यह राजनीति तुमको मुबारक हो। अभी एक

शिमला की माता आई, मैंने कहा तू एम.पी. बन, तू एम.पी का चुनाव लड़। वह कहने लगी-माँ! जबसे मैंने यह ज्ञान लिया, तबसे मेरी इस राजनैतिक क्षेत्र में इच्छा ही नहीं है। मैं इस प्रचार को करना चाहती हूँ। मुझे कोई अच्छी बाई या साधु दे दो। मैं जगह-जगह लोगों को इस ज्ञान के बारे में सुनाना चाहती हूँ और उन्हें आपके दरबार में भेजूँगी। तो देखो, ज्ञान तो सब ले लेते हैं, परन्तु जागृति किसी-किसी भक्त के अन्दर होती है। सेवा का भाव भी किसी-किसी भक्त के अन्दर होता है। गुरु महाराज जी की सेवा से तो मोक्ष की प्राप्ति होती है। सेवा के बारे में राजा दिलीप का नाम आता है, बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं का नाम आता है, जिन्होंने गुरु दरबार के महत्व को समझा और खूब सेवा की। गुरु दरबार अविनाशी होता है, जिसका कभी नाश नहीं हो सकता। अगर वह नाश हो जायेगा: तो सुदामा, भीलनी, द्रौपदी जैसे भक्त, जो समय-समय पर जन्म लेते हैं और भगवान् को याद करते हैं, उनको कौन तारेगा? यह जो मन का परदा तुम्हारे अन्दर में मकड़ी के जाल जैसा है, यह बहुत खराब है। इस परदे को हटाने के लिए सत्संग की जरूरत होती है। सत्संग सुनने से दुष्ट प्रवृत्ति के लोग भी सुधर जाते हैं।

सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परस कुधातु सुहाई।।

देखो, सेवक रात-दिन हमारी सेवा में ही लगे रहते हैं। रात में पहरा देते हैं और दिन में सेवा करते रहते हैं। जिस सुख की कामना संसार के लोग करते हैं, देवी-देवताओं को मनाते हैं, मनौती करते हैं, गुरु महाराज जी की कृपा से वे सुख हमें पहले से ही सुलभ हैं। पर हम किसके लिए यह सुख-दु:ख उठा रहे हैं? आप लोगों के कल्याण के लिए, आपको माया-मोह के बंधन से ऊपर उठाने के लिए। प्रयास करने से किसी के अन्दर तो परिवर्तन होगा, किसी आत्मा की तो जागृति होगी। भक्तों की भलाई के लिए ही संत-महापुरुष कष्ट उठाते हैं तथा उन्हीं के कल्याण के लिए भगवान का आगमन होता है।

जिस तरह पंखा तथा कूलर आदि

चलाने के लिए बिजली की जरूरत होती है, बिना बिजली के वे चल नहीं सकते। इसी प्रकार यह संसार भगवान के नाम पर टिका हुआ है, उसके नाम के बिना यह संसार चल नहीं सकता। इसलिए भगवान के उस नाम को जानो जो इस संसार में समाया हुआ है।

सत्संग सुनने के साथ-साथ भगवान के नाम सुमिरण का निरन्तर अभ्यास करना चाहिए तथा आपको अपने अन्दर वैराग्य भी लाना चाहिए। निरन्तर अभ्यास और वैराग्य से ही यह चंचल मन वश में होता है। यहाँ पर बहुत-से ऐसे लोग भी हैं, जो गुरु दरबार में अच्छी सेवा कर सकते हैं। सेवा में कभी पीछे नहीं रहना चाहिए।

रावण की नगरी लंका में रावण के ही भाई विभीषण की कुटिया में राम-नाम लिखा हुआ था। जब हनुमान की विभीषण से भेंट हुई, तब वे कहते हैं-

अब मोहि भा भरोस हनुमंता।
बिनु हरि कृपा मिलहिं न संता।।

विभीषण कहते हैं-हे हनुमान! मुझे अब विश्वास हो गया है कि भगवान् की मेरे ऊपर कृपा हो गयी, जिससे कि मेरा संत से मिलन हुआ। गुरु महाराज जी ने इन साधुओं को आप लोगों की सेवा में, प्रचार के लिए जगह-जगह भेजा है। इसलिए आप लोगों को अपने इलाके में सत्संग जरूर कराना चाहिए। सुदामा की स्थिति को देखो। सुदामा और भगवान् कृष्ण के गाँव का फासला बहुत नजदीक था। मैं भी कहती थी कि भगवान् कृष्ण और सुदामा का इतना जो वर्णन आता है, वह क्यों आता है?

एक बार जब मैं द्वारिका गई तो वहाँ देख आयी। भक्त सुदामा को मुकुट पहना रखा है और बड़ा विशाल मन्दिर बना हुआ है। इसी तरह से आने वाली पीढ़ियाँ फिर महापुरुषों के मन्दिर बनाने लग जाती हैं और ज्ञान को जाने बिना दुनिया उन्हीं मन्दिरों के पीछे अपने जीवन को समाप्त कर देती हैं। इसलिए आप लोग भगवान के ज्ञान को जानो और जान करके भजन करो। धन-दौलत तो फिर भी मिल जाती है, लेकिन भगवान को जानने का ऐसा अच्छा अवसर फिर नहीं मिलेगा। राजस्थान में बड़े-बड़े महल हैं, वे सब जीर्ण-शीर्ण हो गये तथा उनमें कबूतरों ने घोंसले बना लिये। उनमें रहने वाले राजा-महाराजा सब चले गये। वहां के बड़े-बड़े आलीशान महल आज खाली पड़े हैं। संत कहते हैं-

मुट्ठी बाँधे आया जगत में,
हाथ पसारे जायेगा।

इसलिए सबसे पहले अपने जीवन को बदलो। महापुरुषों को कभी धोखा नहीं देना चाहिए। महापुरुषों को धोखा देकर तो तुम अपने आपको ही धोखा दोगे। चाहे महात्मा हो, बाई हो, चाहे कोई प्रेमी हो, हमारा तो सबसे यही कहना है कि पहले अपने जीवन को बदलो, अपने मन को जीतो। जिसने मन जीत लिया, उसने संसार को जीत लिया। भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को यही तो समझाते हैं कि वैराग्य और अभ्यास से मन वश में होता है। जब तुम अभ्यास ही नहीं करोगे तो वैराग्य भी नहीं होगा। सत्संग सुनने बैठे हो और उसमें भी यदि घर का ही चिन्तन करते रहोगे, तो उससे कोई लाभ नहीं होगा। इसमें गुरु महाराज जी का दोष नहीं, बल्कि अपना ही दोष है।

जगह-जगह इलाकों में ज्ञान का बहुत प्रचार हो चुका है। अच्छे-अच्छे लोग गुरु दरबार में आना चाहते हैं। वे ज्ञान लेना चाहते हैं और भजन करना चाहते हैं। कोई भक्त तो अच्छी करनी एवं विचारों से अपने जीवन को बदल देता है। इसलिए महान् विचार रखो तथा दूसरों की भलाई के लिए कर्म करो। आप स्वयं भी मायारूपी भवसागर से तरो और दूसरों को भी तरने की शिक्षा दो। देखो, परिवार तो चलता ही रहता है। अगर भगवान् के निमित्त भक्ति करते हुए भक्ति में तो तुम अमीर बनते ही जाओगे। इसलिए सत्संग बहुत जरूरी है और महापुरुष के दर्शन करना भी बहुत जरूरी है। तभी मनुष्य अपनी साधना में दृढ हो सकता है। व्यास पूजा के उपलक्ष में जो प्रोग्राम होते हैं, उसमें जरूर अपने इष्टदेव के दर्शन करने चाहिए।

कबीर साहब कहते हैं कि एक शिष्य को अपने गुरु महाराज जी के, दिन में कई बार दर्शन करने चाहिए। अगर किसी कारण से कई बार दर्शन नहीं हो पाते, तो एक दिन में एक बार दर्शन अवश्य करने चाहिए। अगर एक दिन में भी नहीं हो सके, तो सप्ताह में और सप्ताह में भी दर्शन नहीं हो सके, तो एक महीने में दर्शन करने चाहिए।

महापुरुषों की दृष्टि में तो गरीब-अमीर सब समान हैं। उनके अन्दर कोई भेदभाव नहीं रहता है। गौतम ऋषि की स्त्री को देखो, उसके पति ने भी उसको श्राप देकर नरक में धकेल दिया था, पर भगवान् उसके पापों को क्षमा करने के लिए, उसको पावन बनाने के लिए स्वयं उस शिला पर अपने चरण रखते हैं और उसका उद्धार कर देते हैं।

यदि एक महीने में भी दर्शन सुलभ नहीं हो सके, तो छह महीने में अवश्य करने चाहिए। छह महीने में भी यदि दर्शन संभव नहीं हो सके, तो साल भर में व्यास पूजा पर दर्शन अवश्य करें। यदि व्यास पूजा में भी गुरु महाराज के दर्शन नहीं किये, तो शास्त्रों का मत है कि फिर वह शिष्य बनने का अधिकारी नहीं है।

आप लोगों के क्षेत्रों में काफी तादाद में प्रचार बढ़ चुका है। आप लोग किसी की ठगी में मत आओ। जो भगवान से विमुख हो चुके हैं, जिनकी संगति से कुबुद्धि उपजती है तथा भजन में बाधा पहुंचती है, ऐसे लोगों की संगति छोड़ देनी चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि मेरे में और सन्तों में कोई अन्तर नहीं है, इसलिये तुम संतों से उस ज्ञान को जानो। संत वही होते हैं, जो संतों की करनी करते हैं। यही जीवन है जानने का, बाकी कौन-सा जीवन है। जब हम ठठरी पर चढ़ जायेंगे, तब क्या और कैसे जानना है! ज्ञान होने पर मनुष्य की साधना में अन्तर नहीं आता, शरीर में अन्तर आ जाता है। शरीर में बुढ़ापा आ गया और साधना वैसी-की-वैसी है तो इसी तरह से आप लोग सुनो और विचार करो।

देखो माँ शब्द जो है, यह बहुत बड़ा है। जैसे-भगवान के लिये जो शब्द है वह-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव।

पहले माँ से ही शुरू होता है। इसलिये माँ के लिये तू शब्द और भगवान के लिये तू शब्द बोलते हैं। इनके अलावा और किसी के लिये तू नहीं आता है। अगर किसी और को तू कहोगे, तो वे नाराज हो जाते हैं और पूर्वी यू.पी. की तरफ तो तू शब्द को बड़ा ही खराब मानते हैं, आप या तुम शब्द बोलते हैं।

अपने इष्ट-मित्रों को भी इस चीज की अवश्य प्रेरणा देनी चाहिये। इसलिए कहा कि सत्संग कीजिये यानी उत्तम मनुष्य की संगत करने के लिये बताया ताकि बुराईयों से बच जावें। सत्संग से मनुष्य बहुत-सी बुराईयों से बच जाता है और उसके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। आप लोगों के लिये ही यहां के गरीब भक्तों ने, सत्संग कराने का स्थान बनाया। यहाँ महात्मा रहते हैं और इसलिये आप लोग रविवार को एक घंटा सत्संग में अवश्य आयें।

> सत्संग सुनने के साथ-साथ भगवान के नाम सुमिरण का निरन्तर अभ्यास करना चाहिए तथा आपको अपने अन्दर वैराग्य भी लाना चाहिए। निरन्तर अभ्यास और वैराग्य से ही यह चंचल मन वश में होता है। यहाँ पर बहुत-से ऐसे लोग भी हैं, जो गुरु दरबार में अच्छी सेवा कर सकते हैं। सेवा में कभी पीछे नहीं रहना चाहिए।

सत्संग से बहुत प्रेरणा मिलती है, जो चीजें कभी भी हमने नहीं सुनीं वे वह चीजें सुनने में आती हैं। देखो, सत्संग का कितना लाभ है कि जिस समय राजा परीक्षित की सात दिन में मौत होनी थी, तब सब ऋषियों ने कहा कि किसी आत्मज्ञानी को ढूँढ़ो, क्योंकि यह राजा संसार से जा रहा है और नर्क में जायेगा। शुकदेव मुनि को बुलाया, परन्तु वे नहीं आये। तो देख लीजिये, नारद जी कहते हैं कि मैं अभी लाता हूँ शुकदेव मुनि को। क्योंकि वह कह रहे थे कि मेरा क्या मतलब राजाओं के यहाँ जाने का। नारद जी ने शुकदेव जी के पास जाते ही एक प्रश्न पूछा-महाराज मैंने रास्ते में आते समय एक घटना देखी। रास्ते में एक कुआँ खुदा हुआ था और एक सूरदास रास्ते से आ रहा था, आँख वाला यह देख रहा था। वह सूरदास कुएँ में गिर पड़ा, तो इन तीनों में से किसकी गलती है? कुआँ खोदने वाले की गलती है या उस सूरदास की गलती है या उस आँख वाले की गलती है?

तो शुकदेव जी ने कहा कि आँख वाले की गलती है। कुआँ खोदने वाले ने तो यात्रियों के लिये कुआँ खोदा है और सूरदास जानता नहीं था। जैसे-देखो, यहाँ एक सूरदास है, इसको पता नहीं है कि सूर्य की रोशनी कैसी होती है, इसको पता नहीं कि उजाले की रोशनी कैसी होती है, इसने तो देखा ही नहीं। जब इसको ज्ञान हो गया तो अब अच्छी ढोलक बजाता है, भजन गाता है, जगह-जगह जाता है, इसका जीवन सुखी बन गया। तो ठीक इसी तरह से शुकदेव जी को नारद जी कहते हैं कि महाराज आपको भी पाप लगेगा। आप आत्मज्ञानी हैं और देख रहे हैं कि राजा परीक्षित आज इस संसार से आत्मज्ञान के बिना जा रहा है। तब शुकदेव जी आये और राजा परीक्षित को आत्मज्ञान दिया।

इसी तरह से जब आप लोगों के यहां प्रोग्राम था, भक्त की ड्यूटी होती है कि हर घर का दरवाजा खटखटाना चाहिए कि हमारे यहाँ सत्संग है। अगर वह नहीं आया तो उसके अज्ञान का बोझा तुम्हारे पास नहीं रहेगा। अपना फर्ज अदा कर दिया, वहाँ तक सन्देशा दे दिया कि हमारे यहाँ सन्त-महात्मा आये हुए हैं, आप आइये। संत–महापुरुष बड़े दयालु और परोपकारी होते हैं। वे मनुष्य को सत्संग सुनाकर उसे ज्ञान देते हैं ताकि वह अपने जीवन को सफल कर सके।

प्रभु के भजन की कमाई ही सबसे बड़ा धन

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! इस मनुष्य तन को सृष्टि का सरताज कहा गया। भगवान ने यह तन सांसारिक कर्मों में खोने के लिये, व्यर्थ की बातों में गंवाने के लिए नहीं दिया, बल्कि प्रभु के पावन नाम तथा ज्ञान को जानने के लिए दिया है। यही एक ऐसा चोला है, ऐसा तन है, जिसमें समय के सच्चे तत्वदर्शी महापुरुष से हम हरि के पावन नाम को जान सकते हैं, उस शब्द-ब्रह्म को समझ सकते हैं।

हम गुरु नानकदेव जी और दसों बादशाहों की प्रकाश दिवस मनाते हैं कि किस तरह से उन्होंने धर्म की स्थापना की। गुरु गोविन्द सिंह जी के सामने उनके अनेकों शिष्य थे, पर पांच शिष्यों ने ही अपना समर्पण दिखाया और उसी समर्पण भाव की महानता है कि आज तीन सौ साल से भी अधिक हो गये, लेकिन गुरु महाराज जी के नाम के साथ उन पांच प्यारों के भी दर्शन कराते हैं। उन शिष्यों के अन्दर कितना समर्पण भाव था। जब उनकी परीक्षा का समय आया, तो उस समय उन्होंने जाति नहीं देखी, बल्कि अपने गुरु महाराज के आगे समर्पित हो गये।

यह जो सन्तों का इतिहास है, वह हमें यही याद दिलाता है कि यह मानव चोला व्यर्थ की बातों में गंवाने के लिये नहीं मिला। यह चोला इसलिये मिला कि हम प्रभु के पावन नाम को जानें, उस शब्द ब्रह्म को पहचानें, जिसके बारे में बाबा नानकदेव जी महाराज ने कहा-

सबद ही धरती सबद आकास,
सबद ही सबद भयो परकास।।
सगली सृष्टि सबद के पाछे,
नानक सबद घटाघट आछे।।

शब्द से ही धरती और आकाश उत्पन्न हुए। शब्द से प्रकाश प्रकट हुआ और सारी सृष्टि शब्द से ही बनी है। इतनी महानता उस 'शब्द' की है कि जिसने उस शब्द को पहचान लिया, उसने जग को जीत लिया। इसलिये बार-बार संत-महापुरुष कहते हैं -

सबद के मारे मर मिटे,
सबद के तजिये काज।
जिन जिन सबद पहचानियां,
तिनके सरिये काज।।

जिसने उस शब्द को, नाम को पहचान लिया, उसके सारे कार्य सफल हो गये। उसी पर महापुरुष की कृपा होती है, जो शब्द को जान जाता है, नहीं तो बिना जाने मनुष्य माया में ही भटकता रहता है।

अभिमन्यु का पुत्र परीक्षित राजा था। 'शब्द' यानि आत्मज्ञान को जानने से राजा के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया। राजा को ऋषि पुत्र ने श्राप दिया कि जिसने मेरे पिता के गले में मरा हुआ सांप डालकर मजाक उड़ाया है, उसको सात दिन के अन्दर तक्षक नाग काटेगा और उसकी मौत का कारण बनेगा। राजा परीक्षित बहुत धार्मिक राजा था। वह भी श्राप से हिल गया, विलाप करने लगा। तब शुकदेव मुनि ने सात दिन तक राजा परीक्षित को भागवत कथा सुनाई, इस नर तन की महानता को बताया। सातवें दिन राजा को आत्मा का क्रियात्मक ज्ञान कराया, तो जो राजा संसार से जाने के लिये दु:खी था, उसी को अब चोला त्यागने का दु:ख नहीं हुआ।

ज्ञानी और अज्ञानी में यही अन्तर है कि अज्ञानी संसार की माया रूपी कीचड़ में लिपटा रहता है, पर ज्ञानी भक्त जो नामधारी होता है, वह संसार के कीचड़ में कमल की भांति रहता है। उस 'शब्द-ब्रह्म' की वेद-शास्त्रों में बहुत महिमा बताई गई है। जो उस 'शब्द' को पहचान जाता है, वह इस संसार के आवागमन से छूट जाता है, मानव चोले में परमपद को पा लेता है। इसलिये आप लोगों से

बार-बार सत्संग सुनने के लिए कहा जाता है। सत्संग के द्वारा जिज्ञासुओं को उपदेश के लिये तैयार किया जाता है। किसान भी जब खेत में किसी बीज को बोता है, तो वह पहले खेत की मिट्टी की अच्छी तरह से परख करता है, उसकी जांच करता है। अगर खेत में पत्थर हो, तो वह पत्थरों को हटाकर मिट्टी डालता है। किसान उस बीज को ऐसी जगह डालता है, जहां वह बीज अच्छी तरह से उपज सके, वह एक बड़ा पौधा बन जाए, बड़ा वृक्ष बन जाए, जिससे उसमें अच्छे फल लगें। हमारे गुरु महाराज भी शिष्य की परख करते हैं कि इसने कितना सत्संग सुना है, ज्ञान के प्रति इसकी कितनी जिज्ञासा है। जब शिष्य एवं भक्त का हृदयरूपी खेत तैयार हो जाता है, तब उसके हृदय में ज्ञान का बीज बो दिया जाता है।

आज का भक्त बहुत चालाक है। सचमुच में आज भक्तों की परीक्षा हो जाये, तो बहुत कम भक्त होंगे, जो कसौटी में खरे उतरेंगे। कलिकाल का भक्त इतना दृढ़ विश्वासी नहीं है। वह चाहता है कि थोड़े समय में सत्संग मिल जाये, चटपट ज्ञान मिल जाये, पर जैसे इस शरीर को चलाने के लिये हवा भी चाहिये, पानी भी चाहिये, भोजन भी चाहिये, ऐसे ही उस आत्मा के विकास के लिये, हमें सत्संग और सेवा की जरूरत है। इसके साथ-साथ भक्त को गुरु महाराज जी के दर्शन और भगवान के पावन नाम का सुमिरण करना होगा।

कई भक्त आते हैं, उन्हें ज्ञान पर विश्वास नहीं होता, क्योंकि वे भजन नहीं कर पाते। उनका मन तो चंचल है, वह संसार की चीजों को प्राप्त करने में, मोह-माया में इधर-उधर भटकता रहता है, इसलिए भजन नहीं हो पाता। ज्ञान लेने के बावजूद वह संसार में अनेक गुरुओं एवं संतों के पास घूमता रहता है कि शायद इनके पास कुछ अच्छा ज्ञान होगा। अनेक तीर्थों में तथा महामण्डलेश्वरों के पास जाने के बाद, व्रत-उपवास करने के बाद, जब उसे कहीं शांति नहीं मिलती है, तो फिर वह इसी दरबार में आकर शरण लेता है।

पच्चीस साल की उम्र में आत्मज्ञान लिया और साठ साल होने पर भक्ति शुरू करोगे, तो उससे क्या मिलेगा? हमने अपने जीवन का ज्यादा समय तो व्यर्थ की बातों में ही बर्बाद कर दिया। इसलिये यह नहीं सोचना चाहिये कि अगर एक बार प्रोग्राम कर लिया, थोड़ी-सी दरबार में सेवा कर ली, तो हमारा कल्याण हो जायेगा। आज मनुष्य को अपना अवगुण नहीं दिखाई देता है, दूसरों के अवगुण देखने के लिये तो उसके पास बहुत बड़ी आंखे हैं, दूसरों के अवगुण बताने के लिये तो बहुत बड़ा मुंह हो जाता है, पर जो अपने अन्दर के अवगुणों को देखेगा, वही सच्चा शिष्य होगा, क्योंकि जितने भी वह अवगुण देखेगा, उतनी बार वह अवगुणों को मिटाने के लिये गुरु महाराज से प्रार्थना करेगा।

समय बहुत कम बचा है, इसलिए समय की कद्र करो, समय के महत्व को समझो। जिनको आज उपदेश हुआ है, वे ज्ञान की कीमत समझें, क्योंकि यह ज्ञान का खजाना बड़ा अनमोल है। पल-पल में हमें गुरु महाराज की याद आनी चाहिये, जिनकी कृपा से हमें उस नाम की प्राप्ति हुई। अंत समय में केवल भजन की कमाई ही हमारे साथ जायेगी। यदि प्रभु का भजन नहीं किया, तो हमें इस संसार से खाली हाथ जाना पड़ेगा। भजन में कहा है कि-

मुठ्ठी बांधे आया जगत में,
हाथ पसारे जायेगा।

जब यह मनुष्य चोला ही नहीं रहेगा, तब उस नाम को जानने के लिये, सत्संग में जाने के लिये भूत की योनि में आत्मा भटकती रहेगी। मनुष्य शरीर छूट जाने के बाद अन्य योनि में हम आत्मज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिये ज्ञान को जानने के लिए जिज्ञासु का हृदय बालक की तरह निष्कपट होना चाहिये। एक छोटा बालक होता है, उसे नहीं पता कि मुझे कोई क्या कहेगा? उसका हृदय सरल होता है, वह अपनी मस्ती में, धुन में ही रहता है। जब बालक की तरह जिज्ञासु का सरल हृदय होगा, तभी वह गुरु महाराज की कृपा को समझ सकेगा। इसलिए ज्ञान लेने के बाद गुरु महाराज जी की शिक्षाओं को तथा उनके वचनों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। समाज हमेशा भक्तों का विरोधी रहा है। समाज में किसी के कहने से, किसी के बहकाने से, हमें रास्ता नहीं बदलना चाहिए। भक्ति मार्ग में कठिनाइयां तो

ज्ञानी और अज्ञानी में यही अन्तर है कि अज्ञानी संसार की माया रूपी कीचड़ में लिपटा रहता है, पर ज्ञानी भक्त जो नामधारी होता है, वह संसार के कीचड़ में कमल की भांति रहता है। उस 'शब्द-ब्रह्म' की वेद-शास्त्रों में बहुत महिमा बताई गई है। जो उस 'शब्द' को पहचान जाता है, वह इस संसार के आवागमन से छूट जाता है, मानव चोले में परमपद को पा लेता है।

आती ही हैं, लेकिन कभी उनसे घबराना नहीं चाहिए।

भक्ति करते समय मीराबाई को बड़ा विरोध सहना पड़ा। कौन-सा ऐसा भक्त हुआ, जिसने जीवन में विरोध नहीं सहा? भगवान बुद्ध के शिष्य जब ज्ञान प्रचार में निकलते हैं, तो वे उनसे पूछते हैं कि कोई तुम्हे बुरा-भला भी कहेगा, कोई तुम्हें पत्थर भी मारेगा, लोग तुम्हें जान से मारने की धमकी भी देंगे, तब तुम क्या करोगे? उसने कहा कि ज्ञान का प्रचार करते-करते हमारी जान भी निकल जायेगी, तो भी हम अपने आपको धन्य समझेंगे। तो शिष्य ऐसा होना चाहिये, उसके अन्दर गुरु महाराज के प्रति समर्पण होना चाहिए। व्यवहार में नम्रता एवं सहनशीलता होनी चाहिए। एक मां-बाप के पांच बच्चे होते हैं, वे पांचों अलग-अलग विचार एवं स्वभाव के होते हैं, लेकिन यह तो आत्मज्ञान का ही करिश्मा है कि वे सब यहां एक सूत्र में बंधे हुए हैं। जिस तरह माला में तरह-तरह के फूल होते हैं, पर फूलों के अन्दर धागा एक ही होता है, ऐसे ही भिन्न-भिन्न रंग तथा भिन्न-भिन्न जाति के मनुष्य यहां बैठे हैं, वे सब एक ही सूत्र में बंधे हैं। यह उस ज्ञान की शक्ति का ही चमत्कार है। हमें किसी के अन्दर अवगुण नहीं देखने हैं, दरबार में चाहे कोई महात्मा हो, चाहे कोई बाई हो, चाहे सेवक हो, पर उनका कितना त्याग और बलिदान है; उनके जीवन से हमें शिक्षा लेनी चाहिये। उनको आत्मज्ञान के प्रचार में सहयोग देना चाहिये। ज्ञान को पाने के लिए सुपात्र बनो तथा अपने अन्दर की बुराइयों को त्यागो। सुपात्र बनकर ही हम अपने जीवन को भक्ति के मार्ग में आगे बढ़ा सकते हैं।

जब हमें अपने बालक को पढ़ाना होता है, तो समय के अध्यापक के पास जाते हैं, जीते-जागते अध्यापक के पास जाते हैं। जब हमें बीमारी होती है तो हम इलाज के लिये जीते-जागते डाक्टर के पास जाते हैं, हम उनकी फोटो के पास नहीं जाते। उसी तरह जब हमारे मन में अशान्ति होती है तो हमें भी जीते-जागते समय के सद्गुरु की खोज करनी चाहिए। जीते-जागते महापुरुष के पास जाना चाहिए और विनम्र भाव से आत्मा का ज्ञान पूछना चाहिये। जो ज्ञान के बारे में पूछता है, उसको जरूर ज्ञान की प्राप्ति होती है।

जब हमें अपने बालक को पढ़ाना होता है, तो समय के अध्यापक के पास जाते हैं, जीते-जागते अध्यापक के पास जाते हैं। जब हमें बीमारी होती है तो हम इलाज के लिये जीते-जागते डाक्टर के पास जाते हैं, हम उनकी फोटो के पास नहीं जाते। उसी तरह जब हमारे मन में अशान्ति होती है तो हमें भी जीते-जागते समय के सद्गुरु की खोज करनी चाहिए।

संसार में समय-समय पर महापुरुष आये, बड़े-बड़े सन्त-महात्मा आये, सभी ने समय के सद्गुरु की शरण में जा करके आत्मा के ज्ञान को प्राप्त किया। जब शुकदेव मुनि को ज्ञान को पाने की जिज्ञासा हुई, तो वे विदेही राजा जनक के पास गये। वे अपने पिता वेदव्यास जी महाराज से कहते हैं कि मुझे ज्ञान चाहिए। राजा जनक समय के सच्चे तत्वदर्शी महापुरुष एवं आत्मज्ञानी थे। वेदव्यास जी शुकदेव मुनि को राजा जनक के पास भेजते हैं और कहते हैं कि उनसे आत्मा के ज्ञान की प्राप्ति करके अपने जीवन को धन्य बनाओ। शुकदेव भी बहुत शास्त्रों के ज्ञाता थे, वेदों के ज्ञाता थे, लेकिन आत्मा के ज्ञान को जानने के लिए उन्हें भी समय के सद्गुरु राजा जनक के पास जाना पड़ा।

जब शुकदेव राजा जनक के पास गये तो राजा जनक देखते हैं कि शुकदेव के हाथ में डण्डा और कमण्डल है। शुकदेव देखते हैं कि राजा जनक तो महल में निवास करते हैं। मखमल के गद्दों में सोते हैं, सोने-चाँदी के सिंहासन पर बैठे हैं, यह देखकर शुकदेव मुनि के मन में भ्रम हो जाता है कि जो राजा स्वयं भोग-विलासी है, वह मुझे आत्मा का ज्ञान कैसे देगा। उनके मन में ज्ञानी की तो दूसरी ही पिक्चर (तस्वीर) बनी हुई थी। राजा जनक शुकदेव मुनि के मन की बात को समझ गये कि शुकदेव के मन में भ्रम हो गया है। शुकदेव देखते रहते हैं कि राजा तो अपने राजकाज में लगा हुआ है। थोड़ी देर में वहां पर मंत्री आकर कहते हैं कि महाराज! राजमहल में आग लग गई, लेकिन राजा जनक पर उसका कोई फर्क नहीं पड़ा। थोड़ी देर बाद वहां मंत्री फिर आता है और कहा- महाराज! अब तो आग आपके महल के पास में आ गई है। तब भी राजा जनक को कोई फर्क नहीं पड़ा। शुकदेव जी ने कहा कि राजन! आपको तो आग का भी भय नहीं है कि उस आग ने आपके महल को भस्म कर दिया। आग आपके सिंहासन के पास पहुँच चुकी है, अब तो आपका सिंहासन भी जल जायेगा। राजा जनक कहता है कि शुकदेव! ये चीजें तो दुबारा मिल सकती हैं, पर आत्मा का ज्ञान इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है।

THE SOUL IS PART OF GOD

MATA SHRI RAJESHWARI DEVI

There's a song which says, ***"O mind, listen. This world is a fair, a carnival of two days. It will not last forever; everyone has to leave."***

It's just like a carnival. Even if you become very rich and build many houses and have elephants and chariots, when you leave this world, for that journey you will get only a wooden box to carry you.

When someone dies in India, people make a bamboo structure like a ladder, and the body is carried on it towards the cremation ground. So you will not get a horse or an elephant or a car to take you to the next world. You may accumulate as many worldly possessions as you like, but when you leave this world all you'll get is a wooden structure. And you have to go, because this world is nothing but a fair; you can't stay here, you have to go. If you aren't rich in the Holy Name, then you go alone.

You may value your friends and relatives, but they will, at the most, only go with you as far as the funeral pyre where your body will be burned. When your body is put into the fire, nobody will go with you. After that, everyone will go home. At the most, your son will go one step further and light the fire beneath the pyre to burn your body. Your relatives and friends can accompany you only as far as the crematorium. You go alone beyond that. The wealth you have earned in meditation is the only thing that goes with you. The riches of Holy Name are your true companion. It will not leave you. It goes with you wherever you may go after leaving this world.

So, anyone who comes into this world has to leave it. If there is a malignant disease in the body and it is not removed quickly, the entire body will get sick and the disease becomes incurable. It is better to operate and remove the tumor right at the start. If you leave it in your body, you will die. Likewise, all the saints have said to control your mind right from the start. And the mind can be controlled only by the Holy Name. Without it you can't control the mind, it will take you on a downward journey. The mind will not be satisfied until the meditator merges himself in God. Rivers flow down from a mountain and don't stop until they reach the ocean. The river goes on flowing; it is not satisfied unless and until it reaches the sea. Being part of the ocean, it won't rest until it rejoins its source. In the same say, the soul is part of God. The soul will never be satisfied unless and until it reaches God. Being a part of God, it can be satisfied only by merging with God.

The saints say that there is no guarantee of life and that is why they emphasize time and again on the necessity of meditation on the Holy Name. Why have they placed so much importance on this Name? Why did Lord Krishna say to Arjuna,

"Remember me constantly, remember my Name constantly and go on fighting in the battlefield"?

Why did he say this? Because, even if Arjuna died in battle, by remembering the Name he would get salvation. That is why Lord Krishna told him to do both - to meditate and fight. He knew that this Name alone gives salvation, freedom, and liberation. That is why Lord Krishna emphasized meditation on the Name. All the saints have placed great importance on remembering

the Holy Name.

Why are people unhappy? Because they don't listen to what the saints have said. They are doing, what their minds say! They are being guided by the mind. They are under the control of their mind. That is why they are unhappy. If they listened to and followed what the saints say, they would not be unhappy and they would really enjoy life.

The mind is very subtle and very unstable. Whatever it thinks about during one's own life, that very same thought it will think as he dies. In his next life he will reap what he has sown. His next life will be shaped by whatever he is thinking as he dies this time. If you remember God, if you remember the Holy Name as you die, you will reach God. You will merge in that Name and you will not be reborn. But that can happen only if you have been remembering the Name all your life.

If you have been thinking about money, if you have been attached to money, then it is impossible for you to remember the Holy Name when you die. If you have been attached to your children all your life, then it is impossible to remember the Holy Name when you die.

So saints say not to be attached to anything which is bound to give you pain in the next life. Remember the thing which is going to free you. But people don't listen to saints. Why? Because they think that saints are their enemies. But saints don't have any selfish motive. They come into this world only for us, and whatever they say is for our benefit, it is to our advantage. Therefore, we should listen to what they say and follow them sincerely.

Once there were two hills. One was made up of salt and the other was of sugar. A storm came and knocked down a tree. The tree made a bridge between the two hills. So ants from the salt hill and ants from the sugar hill met on that tree and started up a conversation. They found out that one hill was salty and the other was sweet. An ant from the salt hill asked an ant from the sugar hill to take her to the sugar hill so that she could get the taste of its sweetness. So the sugar ant took her there. The salt ant tasted the sugar and said,

"You tricked me. Your hill is not sweet. It is salty, like mine."

The sugar-hill ant thought, 'What's wrong? I'm not lying. I'm telling the truth, so why isn't this ant experiencing the sweetness of my hill?' Then she said,

"Open your mouth and let me see inside."

The salt-hill ant opened her mouth and the sugar ant noticed a salt crystal in which the salt ant had brought along with her. The sugar ant said, ***"Spit that out and then taste my sugar!"*** The salt-hill ant spit out that salt crystal and then tasted the sugar again and said, ***"Yes, now it is sweet!"*** In the same way, we keep the taste of worldly pleasures in our minds yet we want to enjoy the bliss of God. How can we experience the ultimate bliss, unless we spit out the worldly pleasures which we are carrying with us? If we want to enjoy the real bliss, the real happiness, then we have to sacrifice, we have to throw out these worldly pleasures. This is what the saints have said.

If you place an iron in water, it will sink, but if you join it to wood it will float. Ships weighing hundreds of tonnes float because they contain both wood and iron. In the same way, the soul crosses the ocean of this world when it joins with God, just as the ship crosses the sea by the union of iron and wood. This world of 'mine' and 'thine', pain, pleasure, and sorrow is really an ocean. And it is a very deep ocean! We don't know how deep it is! But we have to cross it, and the only way is to let the soul and God unite. Then this human life will be like a boat.

Saints come into the world for us, for human beings. Animals cannot do karma, they cannot do actions for their future.

Only a human being can enjoy or suffer the results of his past actions and at the same time do something for his future. No other animal can do that. Therefore, saints come into this world to tell human beings to do something for their future, and that is why Satsang is very important.

वैशाखी : भक्ति, सेवा, त्याग एवं समर्पण का पर्व

वैशाखी का पर्व सूर्य वर्ष के प्रथम दिन मनाया जाता है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार इस दिन सूर्य पहली राशि मेष में प्रवेश करता है, इसलिए इस दिन को मेष संक्रांति भी कहा जाता है। बंगाली परंपरा के अनुसार यह दिन 'नोतून बोछोर' के रूप में मनाया जाता है। पद्मपुराण के अनुसार वैशाखी का नाम 27 नक्षत्रों में से 16वें नक्षत्र विशाखा नक्षत्र पर रखा गया है। वैशाख लक्ष्मीपति विष्णु जी को अत्यंत प्रिय है, इसलिए इसे वर्ष का सर्वश्रेष्ठ मास मानकर 'माधव मास' भी कहा गया है।

भारतीय पंचांग के आधार पर प्रतिवर्ष 13 अप्रैल तथा प्रति 36वें वर्ष में 14 अप्रैल को वैशाखी का पर्व मनाया जाता है। इस मास में पावन नदी-सरोवरों में स्नान कर सूप, पंखा, चटाई, घड़ा आदि का दान पुण्यप्रद माना जाता है। देसी मास की प्रथम तिथि होने के कारण इस दिन विशेष पूजा-अर्चना करके पकवान या मिष्ठान्न खाने की परंपरा है।

वैशाखी 14 अप्रैल पर विशेष

वैशाखी का पर्व हमें भक्ति, सेवा, त्याग, बलिदान तथा समर्पण की प्रेरणा देता है। ऋतु-परिवर्तन और कृषि से सम्बंधित होने के कारण यह पर्व हर्षोल्लास तथा खुशहाली का प्रतीक बन गया है। वैशाखी पर गेहूं, चना, जौ तथा सरसों आदि की फसल पककर तैयार हो जाती है जिसकी खुशी में किसान जगह-जगह उत्सव मनाते हैं।

वैशाखी पर्व का सम्बंध सिख पंथ की अनेक परंपराओं से जुड़ा हुआ है। वैशाखी के दिन ही गुरु अमरदास जी ने सिख मर्यादा की पहली संगत गोइंदवाल में आयोजित की थी। फिर संत सेनापति दसवें गुरु श्री गोबिन्द राय जी ने वैशाखी के दिन पांच प्यारों को अमृत छकाकर तथा दीक्षा देकर हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए खालसा पंथ की स्थापना की।

गुरु गोबिन्द राय जी ने ईश्वर के प्रति निश्चल प्रेम को ही तीर्थ, दान, दया, तप और संयम की संज्ञा दी। उन्होंने खालसा का अर्थ 'पूर्ण पवित्र ज्योति से युक्त पुरुष' बताया तथा सिखों को अपने नाम के आगे 'सिंह' लगाने का आदेश दिया। स्वयं भी गुरु गोबिन्द राय से गुरु गोबिन्द सिंह बन गये। उनके द्वारा प्रारंभ किये गये दीक्षा-संस्कार को 'पहुल' कहा गया। पहुल संस्कार में सभी व्यक्ति पवित्र जल को चखते हैं। एक विशेष प्रक्रिया के पश्चात् ही इस पवित्र जल को 'अमृत' कहा जाता है। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने इस दिन एक नया उद्घघोष दिया....'वाहे गुरु जी का खालसा, वाहे गुरु जी की फतह' अर्थात् "खालसा ईश्वर का है और ईश्वर की विजय सुनिश्चित है।"

उन्होंने प्रत्येक सिख को "पंच क कार" अर्थात् केश (समर्पण), कड़ा (शुचिता), कंघा (दैव भक्ति), कच्छा (शील) एवं कृपाण (शौर्य) धारण करने का आदेश दिया। यही नहीं गुरु गोबिन्द सिंह ने मानव जाति की एकता, नि:स्वार्थ सेवा, सत्य पालन व स्त्री-पुरुषों के समानाधिकार पर बल दिया।

वैशाखी पर्व का सम्बंध खालसा पंथ की स्थापना से होने के कारण इस दिन प्रभात फेरी तथा कार-सेवा में बच्चे, बड़े-बूढ़े भाग लेकर अपने धर्म का पालन करते हैं। इस दिन गुरुद्वारों में

कीर्तन दरबार तथा लंगर का आयोजन होता है। गुरुद्वारों में श्रद्धालु दर्शनार्थियों को कड़ाह प्रसाद का वितरण किया जाता है। वैशाखी के दिन ही महाराजा रणजीत सिंह ने ब्रिटिश साम्राज्य को समूल उखाड़ने का व्रत लिया था। उनका यह व्रत सन् 1947 में पूरा हुआ जब भारत को अंग्रेजों की गुलामी से छुटकारा मिला तथा देश आजाद हुआ।

हिन्दू तथा सिख पंथ के अलावा बौद्ध धर्म में वैशाखी का पर्व मनाया जाता है। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध को भी इसी दिन ज्ञान तथा निर्वाण की प्राप्ति हुई थी। इतिहासकारों के मतानुसार वैशाखी के दिन ही स्वामी दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। उन्होंने अकर्मण्यता की ओर उन्मुख भारतीयों को कर्म के प्रति सचेत किया। दहेज-प्रथा, सती प्रथा तथा बाल-विवाह को धर्म विरुद्ध बताकर इन सामाजिक कुरीतियों से भारत को मुक्त किया। यही नहीं उन्होंने विधवा-विवाह तथा स्त्री शिक्षा को भी प्रोत्साहन दिया।

वैशाखी पर्व के साथ हमारे इतिहास का अत्यंत दु:खद प्रसंग जलियांवाला बाग का भीषण नरसंहार भी जुड़ा हुआ है। 13 अप्रैल सन् 1919 को वैशाखी के दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में अंग्रेजों द्वारा पारित कानून रौलेट एक्ट के विरुद्ध भारतीयों द्वारा एक शांतिपूर्ण सभा आयोजित की गई थी परंतु ब्रिटिश सरकार द्वारा भेजे गये क्रूर जनरल डायर ने शांतिपूर्ण सभा में आये हजारों निहत्थे लोगों को निर्ममता पूर्वक गोलियों से भूनकर अपनी बर्बरता का परिचय दिया।

इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी दस वर्ष के बालक ऊधमसिंह ने इसी दिन ब्रिटिश सरकार से प्रतिशोध लेने की शपथ ली। भारत के इस शहीद सपूत ने इंग्लैंड में जनरल डायर की हत्या कर जलियांवाला बाग के शहीदों को श्रद्धांजलि दी। वैशाखी का दिन इस अमर शहीद की बलिदान गाथा के रूप में हमारे मानस पटल पर अंकित हो गया है। जलियांवाला बाग की बर्बरता से प्रभावित होकर लाला लाजपतराय ने भी सन् 1928 में "साइमन कमीशन लौट जाओ" के आंदोलन में अंग्रेजों की लाठियों के प्रहार से घायल होकर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया।

वैशाखी का पर्व भारत के अलग-अलग राज्यों में विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है। बंगाल में यह पर्व "नोतून बोछोर" के रूप में मनाया जाता है। इस दिन बंगाली लोग अपने घरों को रंगोली से अलंकृत करते हैं। तमिलनाडु में इस पर्व को "चिताराई' पर्व के रूप में मनाये जाने की परम्परा है। विभिन्न प्रकार के मिष्ठान्न बनाकर सम्बंधियों में वितरित किये जाते हैं। अगले दिन कश्मीर, नेपाल एवं मणिपुर में भी इसे नव-वर्ष का शुभारंभ मानकर आनंदोत्सव मनाया जाता है। वैशाखी पर लोग तीर्थ स्थलों में जाकर गंगा स्नान कर भिक्षुकों को अन्नदान देकर पुण्य लाभ संचित करते हैं। ■

कैसे करें परमबिन्दु परमात्मा का ध्यान

वर्तमान समय में समाज में ध्यान की अनेकानेक पद्धतियां प्रचलित हैं किन्तु ध्यान के बाद मानव जीवन में जो परिणाम आने चाहिए, वह दुष्टिगोचर नहीं हो रहा है। जबकि ध्यान की परिणति बहुत ही सुखद परिणामकारी है। गणित के विलक्षण सूत्रों के खोजकर्ता आर्कमिडीज कहते हैं कि "मैं सम्पूर्ण सृष्टि को अंगुली पर उठा सकता हूँ, अगर मुझे उस स्थिर-बिन्दु का पता चला चल जाए।" यदि हम इस कथन को सतही तौर पर समझने की कोशिश करेंगे, तो निश्चय ही भ्रम में पड़ जाएंगे। भला केवल एक बिन्दु के आधार पर कोई सम्पूर्ण सृष्टि को कैसे नियंत्रित कर सकता है? जैसे एक गाड़ी के पहिए की भी स्थिर धुरी है, तभी गाड़ी सुचारू ढंग से गति पकड़ती है। इसी प्रकार सकल चलायमान सृष्टि के केन्द्र में भी तो आधारभूत स्थिर बिंदु होना चाहिए। वे जानते थे कि इस स्थिर सत्ता को खोजकर सारी सृष्टि पर स्वामित्व पाया जा सकता है। लेकिन अफसोस! खोज की दिशा सही नहीं रही। आर्कमिडीज उस स्थिर बिंदु को अंतरिक्ष मंडल अर्थात बाहरी अस्थिर जगत में खोजते रहे। इसलिए सदा असफल रहे।

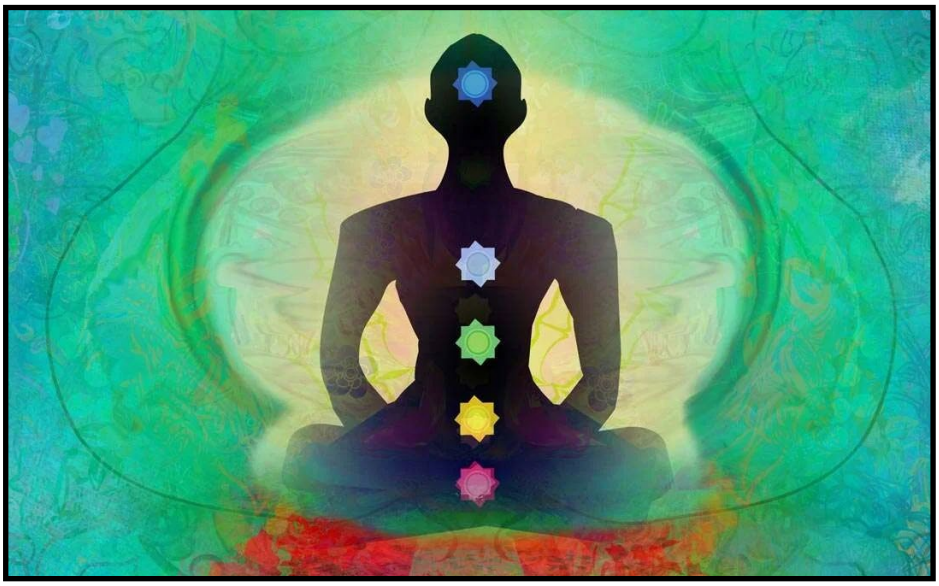

ठीक यही आज के एक इंसान की कहानी है। दौड़-भाग, आपाधापी से पूर्ण जिंदगी! हर क्षण प्रतिस्पर्धा और प्रतियोगिता! जीवन के हर पक्ष में गति! जीवन की इस गति के पीछे कोई तो ऐसी स्थिर सत्ता होनी चाहिए, जो हमारे अस्तित्व का आधार भी हो, परन्तु इस 'स्थिर सत्ता' के संबंध में इतनी जानकारी ही काफी नहीं। इस सत्ता को खोज कर उससे जुड़ाव होना उससे भी अधिक जरूरी है। कारण कि केवल गति 'अस्थिरता' को जन्म देती है। अस्थिरता से तनाव और व्याकुलता की स्थिति बनती है। तांत्रिक विज्ञान कहता है, हमारा मस्तिष्क प्रति सैकेंड 400 बिलियन सूचनाओं पर काम करता है। मस्तिष्क की यह लगातार गति ही उसकी तंत्रिकाओं में अक्सर खिंचाव और तनाव पैदा कर देती है। इसी तरह मन में विचारों की अक्षुण्ण गति इंसान को विकल बनाए रखती है। कई सर्वेक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि जितना-जितना आपके मन में विचारों का झंझावात उठेगा, उतना ही आप अस्थिर और तनावयुक्त होते जाएंगे।

इस विकलता से उबरने का एक ही उपाय है। वह यह कि हम अपने अस्तित्व के उस आधारभूत स्थिर-बिन्दु को खोजें और उससे जुड़ने की कला सीख लें। क्या है यह कला? हमारे आर्य ग्रंथों में स्थिर-जीवन की इस पद्धति को कहा गया- 'ध्यान'। सच यह है कि आज मेडिटेशन करना एक ट्रेंड या स्टेटस सिंबल बन गया है। यही कारण है कि आज तनावमुक्त शांति पाने के लिए अर्थात उस स्थिर बिंदु की खोज में लोग अमूमन तौर पर विभिन्न ध्यान-केन्द्रों पर जा रहे हैं। विभिन्न तरह की पद्धतियों पर प्रयोग कर रहे हैं। आज की प्रचलित मेडिटेशन तकनीक-

1. Mindful Meditation (सचेष्ट ध्यान)
2. Transcendental Meditation (भावातीत ध्यान)
3. Walking Meditation (चलते-चलते ध्यान)
4. Journey Meditation (यात्रा ध्यान)
5. Vibration Meditation (कंपन ध्यान)
6. Objective Meditation (उद्देश्यपूर्ण ध्यान)
7. Movement Meditation (आंदोलन ध्यान)
8. Breathing Meditation (सांस ध्यान)

निःसंदेह, इनके द्वारा एक व्यक्ति को अपने तनावग्रस्त जीवन में कुछ स्वस्थ पल मिलते हैं। तन-मन में शांति और अमन का अनुभव होता है। परंतु कितने समय के लिए और किस हद तक? यह सफल जीवन के प्रभावशाली सूत्र कहे

जा सकते हैं। परंतु "ध्यान" के जिस उच्चतम उद्देश्य को हम लेकर चल रहे हैं अर्थात उस परम स्थिर-बिंदु से संयोग-क्या इनके द्वारा यह लक्ष्य सध पाता है? थोड़ा भी चिंतन करने पर हम पाएंगे कि इनमें से अनेक ध्यान पद्धतियां पदार्थ या क्रिया विषयक हैं।

किसी पदार्थ, शब्द या क्रिया पर एकाग्रता- 'ध्यान' नहीं हैं। इस वर्ग में वे सारी ध्यान-पद्धतियां आती हैं, जो व्यक्ति को किसी वस्तुविशेष या कोई शाब्दिक मंत्र या कोई क्रिया/नर्तन मुद्रा पर फोकस करना सिखाती हैं। ये साधन व्यक्ति के मन के प्रवाह को थोड़े पलों के लिए बदल देते हैं और शांति का एहसास कराते हैं। परंतु इन सब विधियों का प्रभाव जल पर खींची रेखा की तरह क्षणिक और सतही होता है। सर्वपृथक-अनित्य पदार्थों से कभी नित्य पदार्थ की प्राप्ति नहीं हो सकती- **न ह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत्।** रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास जी हमें अनित्य पदार्थों की बड़ी सटीक परिभाषा देते हैं-

गो गोचर जहँ लग मन जाई। सो सब माया जानो भाई।।

अर्थात जहाँ-जहाँ हमारी इन्द्रियां जाती हैं और जिस-जिस दृश्य या पदार्थ का वे अनुभव करती हैं, वह सब मायास्वरूप है; परिवर्तनशील और अनित्य हैं। इसलिए सोचने की बात है कि फिर इन अनित्य पदार्थों मोमबत्ती, बल्ब, फूल, शब्द/मंत्र आदि या क्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित कर हम कैसे नित्य शांति का अनुभव कर सकते हैं?

ये सभी ध्यान की विधियां इन्द्रियों की सहायता से क्रियान्वित की जाती हैं। शास्त्र कहते हैं मन को वश में करना बहुत कठिन है-

इन्द्रिन के बस मन रहै, मन के बस रहै बुद्ध।
कहो ध्यान कैसे लगै, ऐसा जहां विरुद्ध।।

इन्द्रियों ने मन को अपने अधीन कर लिया और मन ने बुद्धि को अपने अधीन कर लिया। जबकि चाहिये यह था कि बुद्धि मन को अपने अधीन रखती और मन, इन्द्रियों को अपने अधीन रखता।

हमारी आँख जिस शक्ति से देखती है, उसी आँख के जरिये उस शक्ति को कैसे देखा जा सकता है? समग्र तौर पर कहें, तो हमारी इन्द्रियां जिस शक्ति से संचालित हैं, वे पलट कर उसी का साक्षात्कार कैसे करें? दार्शनिक शोपहॉवर ने भी उपनिषदों के अध्ययन के बाद यही प्रश्न उठाया था-'हाव टू होल्ड द हेण्ड विद दैट फोर्क व्हिच द हेण्ड इटसेल्फ होल्ड्स? विद व्होम वी नाव द यूनिवर्स, विद व्हाट टू नाव हिम?' अर्थात हाथ को उस चिमटे से कैसे पकड़ा जाए, जिस हाथ ने स्वयं चिमटे को थामा हुआ है? उसका साक्षात्कार किस साधन, किस इन्द्रिय से करें, जिसके द्वारा हमारी ये सब इन्द्रियां ब्रह्माण्ड का साक्षात्कार करती हैं?

केनोपनिषद के ऋषि स्पष्ट कहते हैं- **न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो।** अर्थात हे जिज्ञासु, उस परम बिंदु परमात्मा तक न आंख पहुँचती है, न वाणी और न ही मन आदि। किसी कल्पना पर एकाग्रता 'ध्यान' नहीं है! ठीक यही गणित जर्नी मेडिटेशन या उन ध्यान-पद्धतियों के लिए बैठता है, जो कल्पना की उड़ान पर टिकी हैं। मनोविज्ञान कहता है- इमेजिनेशन इज द फेक्युल्टी ऑफ माइंड- कल्पना मन की क्रिया है। काल्पनिक दृश्य (माइंड आई) मन की आंख से गढ़े जाते हैं। और मन के संबंध में भी केनोपनिषद ऋषिवर का यही कहना है-

यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम।
तदेव ब्रम्हा त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।।

जिसका मन से मनन या कल्पना नहीं की जा सकती, पर जिसके द्वारा मन मनन "कल्पना" करता है, वही एक परम-स्थिर बिंदु परमात्मा है। कहने का आशय है कि वह कल्पनातीत है। इसलिए कल्पनाधारित साधना के साधन भी उसकी थाह नहीं पा सकते।

श्वास-प्रश्वास क्रियाएं 'ध्यान' नहीं हैं! यदि हम गौर करें, तो पाएंगे कि आजकल की सर्वाधिक प्रचलित ध्यान-तकनीक ब्रीदिंग टेक्नीक श्वास-प्रश्वास क्रियाओं पर आधारित हैं। परंतु श्वासों का नियंत्रण या शोधन ध्यान नहीं, 'प्राणायाम' कहलाता है। 'प्राणायाम' अर्थात 'प्राणों का आयाम'- प्राण संबंधित व्यायाम। पातंजलि अष्टांग योग के अनुसार-

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणा
ध्यानसमाधियोअष्टावग्डानि।

योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये आठ अंग हैं। क्रमानुसार 'प्राणायाम' चौथे स्तर पर और 'ध्यान' सातवें स्तर पर आता है। अतः जिन श्वास-प्रश्वास क्रियाओं को हम 'ध्यान-पद्धति' मान बैठे हैं, वे केवल विशेष प्राणायाम की विधियां ही हैं; और कुछ नहीं! यही कारण है कि इन उक्त ध्यान-क्रियाओं के साधक भी आर्कमिडीज की ही तरह उस परम स्थिर-बिंदु परमात्मा को खोजने में असफल ही रह जाते हैं। केवल थोड़ी क्षणिक स्थिरता या मन बहलाव को ही ध्यान-फल मानकर संतुष्ट हो जाते हैं। ■

प्रेरक प्रसंग

मुझे सिर्फ आप ही नजर आते हैं

सिख धर्म में मानव सेवा और गुरु दरबार का बहुत महत्व है। सिख परंपरा के गुरुओं ने खुद भी संगत की सेवा की है और हमेशा सेवा करने का आदेश दिया है। गुरु दरबार के सेवकों में एक प्रमुख सेवादार थे, भाई घनैया जी। भाई घनैया जी गुरु गोविन्द सिंह जी के दरबार में सेवा करते थे। भाई घनैया जी बहुत निर्मल स्वभाव के थे और गुरु दरबार में बहुत ही लगन और प्यार से सेवा करते थे। जब गुरु गोविन्द सिंह जी मुगलों के जुल्म का विरोध करते हुए युद्ध लड़ रहे थे, उस समय भाई घनैया जी निडर होकर गुरु जी के सेना को पानी पिलाने की सेवा करते थे। पर, भाई घनैया जी सिर्फ गुरु जी की सेना को ही नहीं अपितु दुश्मन की सेना को भी पानी पिलाते थे। वे सेवा करते समय कभी यह नहीं सोचते थे कि जिसे वो पानी पिला रहे हैं, वो दोस्त है या दुश्मन।

घनैया जी की इस सेवा से नाराज होकर गुरु जी की सेना के कुछ लोग गुरु महाराज जी के पास पहुँचे और कहा कि भाई घनैया जी अपनी सेना के साथ-साथ दुश्मन के सैनिकों को भी पानी पिला रहे हैं, उन्हें रोका जाए। गुरु गोविन्द सिंह ने भाई घनैया जी को बुलाया और कहा- घनैया, तेरी शिकायत आई है। भाई घनैया जी ने शिकायत सुनी और कहा, गुरु महाराज जी! मैं क्या करूं.....मुझे तो लड़ाई के मैदान में कोई नजर ही नहीं आता। मैं जहाँ भी देखता हूँ, मुझे सिर्फ आप नजर आते हैं और मैं जो भी सेवा करता हूँ वो सब आपकी ही होती है। गुरु गोविन्द सिंह जी भाई घनैया जी की बात सुनकर बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा कि भाई घनैया जी, आप गुरु के उपदेशों को सही मायने में समझ गए हैं। गुरु महाराज ने उन्हें हृदय से लगाकर आशीर्वाद दिया। धन्य हैं ऐसे गुरुभक्त, जिन्होंने गुरु की दीक्षा को अपने जीवन में साकार कर दिखाया। गुरु महाराज जी की सबसे बड़ी प्रसन्नता का कारण यही है कि शिष्य उनकी शिक्षा को जीवन में साकार करे। ■

भाव का भूखा हूँ मैं

भाव का भूखा हूँ मैं और, भाव ही एक सार है।
भाव से मुझको भजे तो, भव से बेड़ा पार है।। टेक।।
अन्न धन अरु वस्त्र भूषण, कछु न मुझको चाहिए।
आप हो जायें मेरे बस, यही मेरा सत्कार है।। भाव.....
भाव बिन सर्वस्व भी दे तो, मैं कभी लेता नहीं।
भाव से इक फूल भी दे, तो मुझे स्वीकार है।। भाव...
भाव जिस जन में नहीं, उसकी मुझे चिंता नहीं।
भाव वाले भक्त का, भरपूर मुझ पर भार है।। भाव...
बाँध लेते भक्त मुझको, भाव की जंजीरों में।
इसीलिए इस भूमि पर, होता मेरा अवतार है।। भाव...
जो मुझी में भाव रखकर, लेता है मेरी शरण।
उसके और मेरे हृदय का, एक रहता तार है।। भाव...

परमाराध्या माताश्री मंगला जी के आशीर्वचन से शुरू होकर परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के आशीर्वाद के साथ त्रिदिवसीय साधना शिविर संपन्न

श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के शुभाशीष से 10 फरवरी से 12 फरवरी, 2023 तक श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित त्रिदिवसीय साधना शिविर अनेक आत्म-अनुभूतियों के साथ संपन्न हुआ। इस साधना शिविर का उद्देश्य शारीरिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास था। शिविर में देशभर में अध्यात्म ज्ञान का प्रचार-प्रसार कर रहे महात्मा/बाईगण, प्रचारक, सहायक प्रचारक तथा प्रमुख कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया गया था। इन सभी साधकों की संख्या भले ही 150 थी किन्तु इन सबकी उपस्थिति बहुत ही महत्वपूर्ण, उपयोगी और अनुकरणीय थी, क्योंकि यही सब सद्गुरु महाराज के अध्यात्म ज्ञान के दीपक बनकर आत्म-पिपासुओं के हृदयों में आत्मज्ञान की ज्योति को प्रज्ज्वलित करते हैं। जो स्वयं ज्ञानवान, भक्तिवान

परम आराध्या माताश्री मंगला जी श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में हंस ज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय साधना शिविर शुरू होने से पहले 8 फरवरी को शिविर में पधारे महात्मा जी, बाईजी, प्रचारक गण एवं साधकों का मार्गदर्शन करते हुए

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के आशीर्वाद से श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में हंस ज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय साधना शिविर में भाग लेते हुए महात्मा जी, बाईजी, प्रचारक गण एवं साधक

और विवेकवान होता है, वही अन्यों को भी प्रकाशवान बनाता है। सद्गुरु महाराज की प्रेरणा से आयोजित इस साधना शिविर में जहाँ सभी महात्मागण, बाईगण, प्रचारकों, सहायक प्रचारकों तथा कार्यकर्ताओं ने सामूहिक रूप से ध्यान साधना कर अपनी अन्तर्चेतना को जगाया, वहीं शास्त्रोक्त ढंग से साधना की विधि को जाना-समझा और अभ्यास किया।

जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की उपलब्धि के लिए एकनिष्ठ भाव से सतत साधना-पुरुषार्थ की जरूरत होती है। एक विद्यार्थी जब बाल्यकाल से युवावस्था तक लगातार विद्यालय, महाविद्यालय में प्रवेश लेकर लगातार अध्ययनरत रहता है तो वह उस विषय का विशेषज्ञ बन जाता है। इसी तरह से आत्म-साक्षातकार के जिज्ञासु भी श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के सानिध्य में रहकर उनके निर्देशानुसार सतत अध्यात्म ज्ञान की साधना में निरत रहते हैं तो शनैः-शनैः वे अपनी मन, बुद्धि और इन्द्रियों को नियंत्रित कर अंतर्मुखता को प्राप्त होकर आत्मज्ञान को उपलब्ध हो जाते हैं। सांसारिक विषय-वासनाओं में भटकते, अटके और अनुरक्त मन को अंतर्मुखी बनाने के लिए निरन्तर सद्गुरु सानिध्य, संत संगति और सत्संग की नितांत आवश्यकता होती है। इन आत्मविज्ञ महापुरुषों के सानिध्य में बैठकर

श्री हंसलोक आश्रम में हंस ज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय साधना शिविर में प्रतिभाग करते हुए महात्मा जी, बाईजी एवं प्रचारक

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के आशीर्वाद से श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में हंस ज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय साधना शिविर में भाग लेते हुए महात्मा जी, बाईजी एवं प्रचारक गण का समूह फोटो

सत्संग श्रवण करने से मन स्वत: ही अंतर्मुखी और आत्म पिपासु बन जाता है। जिज्ञासु मन ही अध्यात्म तत्व की ओर उन्मुख होता है।

साधना शिविर का शुभारम्भ परमाराध्या माता श्री मंगला जी के आशीर्वचन के साथ हुआ। पूज्य माता जी ने 8 फरवरी को ही दर्शन एवं आशीर्वाद देकर साधना शिविर का श्रीगणेश किया। यह साधना शिविर प्रतिदिन प्रात: 6.30 बजे से आरंभ होकर क्रमश: आरती-वंदना, ध्यान-सुमिरण, योगासन, मार्गदर्शन, शंका समाधान, संध्या आरती-वंदना, ध्यान-सुमिरण के साथ रात्रि 8 बजे तक चला। प्रात:काल सभी सामूहिक रूप से आरती-वंदना करते, फिर ध्यान-सुमिरण किया। तत्पश्चात् श्री उमाकान्त चौधरी ने योगासन, प्राणायाम, मुद्रा एवं बंध के बारे में विस्तार से मार्गदर्शन कर उनका अभ्यास कराया। इसके बाद अल्पाहार और विश्राम। पुन: प्रात: 10 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक महात्मा आत्मसंतोषीबाई जी के द्वारा अनेकानेक योग और अध्यात्म शास्त्रों के प्रमाणों तथा स्व–अनुभव के आधार पर आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया गया। ध्यान, अनहद नाद, खेचरी मुद्रा और प्राणों में सन्निहित परमात्मा के नाम सुमिरण के बारे में व्यावहारिक रूप से समझाया तथा अभ्यास कराया। दोपहर भोजन और विश्राम के बाद पुन: अपराह्न 3 बजे से सायं 5 बजे तक शंका समाधान का सत्र चलाया गया जिसमें महात्मा आत्मसंतोषीबाई जी ने साधकों की अध्यात्म विषयक शंकाओं एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया। तत्पश्चात चाय-विश्राम के बाद सायं 6.30 बजे से संध्याकालीन आरती-वंदना फिर ध्यान-सुमिरण किया गया। इस तरह तीनों दिन शिविर का संचालन किया गया। 10 फरवरी को भी इसी श्रृंखला से शिविर संचालित किया गया जिसमें अपराह्न काल शंका समाधान सत्र में महात्मा गुरुआज्ञानंद जी ने गुरुभक्ति के संबंध में विस्तार से प्रकाश डाला। अगले दिन 11 फरवरी को भी क्रमश: साधना शिविर का संचालन किया गया जिसमें शंका समाधान सत्र में महात्मा शिवकृपानंद जी गुरुसेवा के संबंध में विस्तार से वक्तव्य दिया। इसके बाद महात्मा हरिप्रियाबाई जी ने साधना एवं भक्ति मार्ग के व्यवहारिक पक्ष को विस्तार से समझाया। शिविर के अंतिम दिन भी प्रात: से क्रमानुसार साधना शिविर का शुभारंभ किया गया। प्रात: मागदर्शन सत्र के बाद अपराह्नकालीन सत्र में रविवारीय साप्ताहिक सत्संग का भी आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली प्रदेश के सैकड़ों प्रेमी भक्तों एवं श्रद्धालुओं ने भाग लेकर महात्मागण के सारगर्भित सत्संग से लाभ उठाया। महात्मा कृपानंद जी, महात्मा हरिज्ञानानंद जी एवं महात्मा शिवकृपानंद जी का अध्यात्म ज्ञान से ओतप्रोत सत्संग

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के आशीर्वाद से श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में हंस ज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय साधना शिविर में भाग लेते हुए महात्मा जी, बाईजी, प्रचारक गण एवं साधकों का समूह चित्र

हुआ। तीनों दिन महात्मा कृपानंद जी एवं श्री जगदीश भाई के द्वारा ज्ञान व भक्ति से ओतप्रोत भजन प्रस्तुत किए गए। इसके अलावा सुरेश वर्मा, बी.के. त्यागी, राजकुमार साहू एवं राजेन्द्र प्रजापति ने भी सुन्दर भजन प्रस्तुत किए गए। शिविर की निर्धारित समय सारिणी के क्रमानुसार संध्या आरती-वंदना, ध्यान-सुमिरण के बाद शिविर का समापन हुआ। तत्पश्चात् सभी को दरबार की ओर बूंदी लड्डू का प्रसाद और संस्था की वर्ष-2023 की डायरी प्रदान की गयी। शिविर का संचालन राकेश सिंह ने किया।

कराया गया। तत्पश्चात् परमपूज्य श्री भोले जी महाराज का शिविर में पदार्पण हुआ। श्री महाराज जी के दर्शन पाकर सभी साधकों के हृदय-कमल आनंद से खिल उठा। इस तरह परमपूज्य श्री सद्गुरुदेव महाराज के दर्शन और आशीर्वाद के साथ इस अतिमहत्वपूर्ण साधना शिविर का समापन हुआ। इन सभी साधकों के लिए साधना शिविर, आवास, शौच, स्नान तथा भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गयी थी। साधना शिविर को भी बहुत सुन्दर ढंग से आच्छादित कर बनाया गया था ताकि मौसम का प्रभाव न पड़े, साधकों की सुविधा के लिए फर्श पर गद्दे बिछाये गये थे तथा कुर्सियों पर बैठने की व्यवस्था की गयी थी। शिविर में सुन्दर मंच बनाया था जिस पर साधना शिविर का बैनर और परमपूज्य श्री सद्गुरुदेव महाराज एवं परमपूज्य माता जी की सुन्दर छवि स्थापित की गयी थी। शिविर के दोनों तरफ पर्दे पर साधना से संबंधित श्लोक, दोहा एवं चैपाई लिखे बैनर लगाये थे, जो सतत साधकों को साधना के लिए प्रेरित कर रहे थे। इस साधना शिविर के आयोजन में सभी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इस तरह श्री गुरु महाराज जी की कृपा से यह साधना शिविर अनन्त आध्यात्मिक प्रेरक स्मृतियों के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ■

श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में हंस ज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय साधना शिविर में साधकों का मार्गदर्शन करते हुए महात्मा हरिज्ञानानंद जी, महात्मा शिवकृपानंद जी, महात्मा आत्मसंतोषी बाई जी एवं महात्मा हरिप्रिया बाई जी

श्री हंसलोक आश्रम में हंस ज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर द्वारा आयोजित साधना शिविर में साधकों को भोजन प्रसाद वितरित करते हुए हंसलोक आश्रम सेवक

अगले दिन 13 फरवरी को प्रातःकालीन आरती-वंदना, ध्यान-सुमिरण और योगासन को क्रमशः

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी द्वारा श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में होम्योपेथिक चेरिटेबल डिस्पेंसरी का शुभारम्भ

श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली। हंस ज्योति "ए यूनिट आफ हंस कल्चरल सेंटर" के सौजन्य से 19 फरवरी, 2023 को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में होम्योपैथिक डिस्पेंसरी का शुभारम्भ परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के करकमलों द्वारा किया गया। यह होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी संस्था/आश्रम में सेवारत महात्मा/बाईगण तथा सेवकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगी। ज्ञात हो कि वर्तमान काल में लोग होम्योपैथिक और आयुर्वेदिक दवाओं पर अधिक भरोसा कर उनकी ओर आकर्षित हो रहे हैं। यदि रोगी चिकित्सक के बताये अनुसार नियमित रूप से दवाई का सेवन करे तो ये दोनों ही पद्धतियां आयुर्वेदिक और होम्योपैथिक रोग को जड़-मूल से समाप्त करने की शक्ति रखती हैं। इसलिए लोगों की मांग और जरूरत को देखते हुए श्री हंसलोक आश्रम में होम्योपैथिक डिस्पेंसरी का फीता काटकर शुभारम्भ किया गया है। आशा है, यह डिस्पेन्सरी सभी को रोगमुक्त बनाने में उपयोगी सिद्ध होगी।

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं परमाराध्या माताश्री मंगला जी श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली में हंस ज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर द्वारा नवनिर्मित होम्योपैथी डिस्पेंसरी का फीता काटकर शुभारम्भ करते हुए

इस मौके पर माताश्री मंगला जी ने कहा कि मानव की नकारात्मक सोच, असंतुलित आहार और प्रकृति के बिगड़ते संतुलन के चलते आज लोग अनेक गंभीर बीमारियों का शिकार होते जा रहे हैं। मानसिक तनाव के चलते शुगर और उच्च रक्तचाप की बीमारी ने आज आधी आबादी को अपने आगोश में ले लिया है जिससे छोटी-छोटी उम्र के लोगों को हार्ट अटैक होना बहुत ही चिन्ता का विषय है। उन्होंने कहा कि श्री हंसलोक आश्रम में इस होम्योपैथी डिस्पेंसरी के खुलने से यहां रहने वाले सभी लोगों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होगा। कार्यक्रम के दौरान परमपूज्य श्री भोले जी महाराज और माताश्री मंगला जी उपस्थित श्रद्धालु-भक्तों को प्रसाद वितरित किया। ■

परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं परमाराध्या माताश्री मंगला जी श्री हंसलोक आश्रम में नवनिर्मित होम्योपैथी चैरिटेबल डिस्पेंसरी का शुभारम्भ करने के बाद प्रसन्न मुद्रा में। साथ में डॉ. सुशील कुमार गुप्ता

माताश्री राजेश्वरी देवी की जयंती 'मातृ शक्ति दिवस' के सुअवसर पर
जनकल्याण सत्संग समारोह

आप सभी प्रेमी भक्तों को अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयन्ती **''मातृ शक्ति दिवस''** के सुअवसर पर **'जनकल्याण सत्संग समारोह'** 6 व 7 अप्रैल, 2023 (गुरुवार एवं शुक्रवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस समारोह के मुख्य अतिथि **परमपूज्य श्री भोले जी महाराज** एवं **माताश्री मंगला जी** होंगे। इसके अलवा अनेक विद्वानों, बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों, महात्मागण के उद्बोधन के साथ प्रसिद्ध संगीतकारों एवं गायकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा भजन-संगीत की प्रस्तुति की जाएगी।

अत: आप अपने क्षेत्र से अधिक से अधिक प्रेमी भक्तों, जिज्ञासुओं एवं श्रद्धालुओं के साथ सपरिवार पधारकर **'जनकल्याण सत्संग समारोह'** में भाग लेकर आत्म लाभ प्राप्त करें।

कार्यक्रम निम्नानुसार है-

6 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन, भजन-संगीत एवं सास्कृतिक कार्यक्रम

7 अप्रैल को सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक प्रवचन, भजन-संगीत एवं सास्कृतिक कार्यक्रम

स्थान- श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड,
भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली-110074

निवेदक- **हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर),** नई दिल्ली
संपर्क-8800291788, 8800291288

श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक एवं सेविकाओं को सूचित किया जाता है कि माताश्री राजेश्वरी देवी जी की जयन्ती **''मातृ शक्ति दिवस''** के सुअवसर पर **'जनकल्याण सत्संग समारोह' 6 व 7 अप्रैल, 2023** (गुरुवार एवं शुक्रवार) को श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर हम सभी को परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के दर्शन, प्रवचन एवं सेवा का सौभाग्य प्राप्त होगा।

इस सत्संग समारोह के अवसर पर **श्री हंसलोक सेवक व सेविकाओं का 5 से 8 अप्रैल, 2023 तक "सेवा शिविर" लगाया जा रहा है** जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 5 अप्रैल, 2023 को अपराह्न 2:30 बजे से श्री हंसलोक सेवकों की एक बैठक रखी गयी है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अत: सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 4 अप्रैल की शाम अथवा 5 अप्रैल की सुबह तक श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली अवश्य पहुँच जायें।

निवेदक
निदेशक- श्री हंसलोक सेवक संगठन

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

आप सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण, प्रचारकों, श्री हंसलोक सेवकों, कार्यकर्ताओं एवं प्रबुद्ध पाठकों को विदित ही है कि हंसलोक संदेश पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से जारी है। अत: आप सबसे निवेदन है कि अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आप सब अपने गाँव/क्षेत्र में **''हंसलोक संदेश''** मासिक पत्रिका के अधिक से अधिक धारकों तक पहुँचायें। पत्रिका अध्यात्म ज्ञान प्रचार का स्थाई माध्यम है। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी के देशभर में स्थान-स्थान पर आयोजित सत्संग समारोह में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही सत्संग समारोह के सुन्दर-सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा माता जी/महाराज जी के कार्यक्रमों की सूचना, संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, जनकल्याण से सबंधित गतिविधियों के साथ संस्था द्वारा चलाये जा रहे अथवा प्रस्तावित विभिन्न सेवा उपक्रमों की भी सूचना व समाचार मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए। आप अपने क्षेत्र के स्कूल, कालेजों, लाइब्रेरी, संस्था-संगठनों एवं सरकारी-अर्द्ध सरकारी कार्यालयों में भी पत्रिका दे सकते हैं। प्रेमी भक्तों/पाठकों को ज्ञात हो कि संस्था के सभी प्रचारक महात्मा/बाईगण तथा सेवकों के पास भी पत्रिकायें रहती हैं। आप उनसे हंसलोक संदेश पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी के नाम व पते पर सभी पत्रिकाएं बंडल में मंगवायें।

नोट:- (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय दानदाता का पेन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर रसीद पर अवश्य लिखें।
(2) पत्रिका की 100/- रुपये से अधिक की रसीद न काटी जाए।
(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पेन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर लिखकर अवश्य भेजें।
(4) यदि आप एक से अधिक बंडल के रूप में पत्रिका मंगाना चाहते हैं तो मो.नं-9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-
हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-
कार्यालय - हंसलोक संदेश
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड,
भाटी, छतरपुर, नई दिल्ली-110074
संपर्क सूत्र-8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। **-सम्पादक**

उत्तराखंड राजभवन में वसंतोत्सव के शुभ अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक संध्या का राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह, माताश्री मंगला जी एवं श्री भोले जी महाराज ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

वैशाखी महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं!

वैशाखी का महापर्व हमें सद्गुरु महाराज एवं ईश्वर के प्रति सेवा, भक्ति, त्याग और बलिदान की प्रेरणा देता है। आज ही के दिन दसवें गुरु श्री गोविंद सिंह जी ने अपने पाँच प्यारों (शिष्यों) को आत्मज्ञान की दीक्षा देकर एवं अमृत पान कराकर उन्हें सिंह की उपाधि से अलंकृत किया तथा हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए खालसा पंथ की स्थापना की। वैशाखी पर्व पर हम भी आत्मज्ञान को जानकार अपने मानव जन्म को ज्ञान-संपदा से समृद्ध करें।

- परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी

आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो YouTube पर उपलब्ध है। YouTube पर HANSLOKTV चैनल को अवश्य सबस्क्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा अन्य संत-महात्माओं के सत्संग एवं भजनों से लाभ प्राप्त करें।